



हिन्दी  
ग्रामोफोन रेकार्ड  
सङ्ग्रह

प्रथम भाग

जिसमें हिन्दुस्तानके बड़े प्रसिद्ध प्रसिद्ध  
५८ गवैयोंके ५०० रिकार्डोंका पूरा पूरा  
१००० गाना है।

जिसमें

मिस्टर एस० पी० जैनी

कलकत्ता

ने संग्रह किया

प्रथम बार १०००



मूल्य रु० १०।



## सविनय प्रार्थना

— : —

प्रियवर मित्रों !

यह पुस्तक बहुत ही परिश्रम से तैयार की गई है जो कि सेवानें उपस्थित है ।

इस पुस्तक के सब गाने रिकार्डोंसे सुन सुन कर लिखे गये हैं सम्भव हो सकता है कि कुछ भूल हो, इस लिये मैं सविनय प्रार्थना करना हूं कि यदि कुछ भूल मेरे सुनने में या लिखने अथवा छापेखाने को गलती से हो गई हो तो आप कृपया मुझको क्षमा करेंगे और जो महाशय किसी भूलसे मुझको सूचित करेंगे मैं उनका बहुत ही धन्य हूंगा और आगामी छपाई में सुद्ध कर दूंगा ।

एक पुस्तक में कुछ रिकार्डोंका गाना आकर बहुत ही बड़ा हो जाती इसलिये इनके भाग कर दिये गये हैं । पहला भाग तो यह है जो और दूसरा भाग अल्दी हो तैयार करके सेवा में उपस्थित किया जायेगा ।

प्राथो

एत्त० पी० जैनी

## अशुद्धियों को शुद्ध काँजये

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
क्युअक	क्युअक	१०१
३३३३	३३४३	१५८
१२७	१४६	१३१



ग्रन्थोंका नाम	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
मिम राज दुबारी	१८० से	१८८ तक
मिम रोहन आरा	१८८ से	१९६ तक
मिम जोहरा जान	१९६ से	२०० तक
मिम जोहरा बाई । स्वर्गीय ।	२०१ से	२०८ तक
मि० अन्धुहा	२०८ से	२१७ तक
मास्टर अमोर अली	२१७ से	२२० तक
मि० अन्वर	२२० से	२२५ तक
मि० अगमर खली	२२६ से	२२८ तक
मि० बाबू कौवाल	२२८	
मि० बल्लारी	२२६ से	२३७ तक
परिचित बुद्धि बान्द्र	२३७ से	२४३ तक
परिचित बाई नारायण	२४३ से	२४६ तक
मि० हम्मू सादेव	२४६	
मि० भाई हंवा	२४७ से	२७६ तक
मि० भाई दया	२७६ से	२८० तक
मास्टर दुल्हा मिर्था	२८० से	२८२ तक
स्वर्गीय पृ० एन० दत्त	२८२ से	२८३ तक
मि० आता कुच	२८३ से	३२४ तक
गोस्वामी नारायण	३२४ से	३२६ तक
मि० हार्मिद हुसैन	३२६ से	३३० तक
परिचित लक्ष्मी दत्त	३३० से	३३० तक
मि० माहम्मद हुसैन	३३० से	३३० तक
परिचित नन्दा बाल	३३० से	३३० तक
मि० ज्यार साहब	३३० से	३३० तक
मेड गोभयत्त	३३० से	३३० तक
मि० सुन्दर अम्ह	३३० से	३३० तक
मि० कच जान	३३० से	३३० तक
मि० ० टाकूनाम	३३०	
मि० शाशासुत	३३०	
मिम मंगल जान	३३० से	३३० तक
मिम अमर बाला	३३०	

# मिल अब्दुल वाई

P 245

दादर भैरवी

नं० पी० २४५

वेगो रो निपा निपातो हनातो मन—वेगो रो ----  
 वह नाजिरिन नाम मोहम्मद का. छो इतना पता तो है—वेगो रो  
 पाने दगा भी कोई करता है. छात्र तह मुमने जाना कि कोई मगा है  
 मुदाने नईनर जो छब हुन निपा, मुनको नाचून न था हान पराने दिनका  
 मने जेनेके कियो से नरो वाकिरु या विनहार  
 कोई मगा हो तो वह जकर क के पानो दगा  
 कुछ से कपटी तहरीर वाला मना क्या होये  
 से होये वर निपरात की मनाहा होये—वेगो रो ----

दुसरी तरफ :

गुजरा

निपा करने है वो साहब जवन मे रा! करने है  
 मुदाने हनर करके दगों की फगवाट करने है  
 मुदा नैरुद रकन इन हमोरो के मजबुत मे  
 का वह दिन पहिल तो से मने है छि बाबाट करने है—निपा --  
 न हुमा जवन होये है न गय करने है जग  
 पर का वो हुन निहा मेरो कगवाट करने है  
 मना निहा हमोरो का न उन तह क हुये से  
 मना का साहब का प से मना कगवाट करने है—निपा करने है ...



दूसरी तरफ :—

भजन

आओ जो आओ मेर प्राण के जिनाने वाले  
 तुम अलख अगम अविनाशी, तुम घट घट क हो बामो  
 अमित भुवन प्रसाद के बनाने वाले  
 भजन की प्रभु छव दीना, हृषीकेश का घर सोना  
 बन्दो से बन्दो देवको दुखमे दुःखने वाले  
 अजामिल पापी को जम दण्ड से बचाने वाले  
 गौतम की निस्विया सारी बड़ायो द्रोपदी को तारी  
 अजामिल पापी को जम दण्ड से बचाने वाले  
 कौशिक मरुत राखर वारे, दगरथ के तुम हो दुलार  
 ना, का सुहाइ इन गर्द में मिलाने वाले ।

— ( ३ ) —

P. 1256

होली

पी० १२५६

ज्योदा के साथ खेने होंगे, कमी धूम मवागे  
 मुर्खी की धन छल गोरी निरुध भई सब मिल बालक डारी  
 अह अह भुवन सब मारी, कमी कोठियों को खोंगे—कमी - - -  
 साथ अनाथक गल भगावन टियो अह ककळोंगी  
 गारी दू गो दो : इ माहन तुम छल नही मारी—कमी - - -  
 बाबा बन्धन छलर दुपार क गतिधन कीक मवागे  
 इ : दुपार्य साथ सब बाहर कमी गग का भोंगे—कमी - - -

दूसरी तरफ :— वैन

कौने बन बीर दुलैना दुलैना हो राता—कौने बन ---  
 बेना बनवांगे दुलैना दुलैना हो राता—कौने बन ---  
 मे हू माझिने नर हू दुलैना माझिने घटा छाई हू ।  
 बर हो बागवां को घनत को बहार छाई हू ॥ कौने बन ---

### मिस अल्लरी जान

P 362

दादा

पी० ३३८८

इन्हो मीनों मे मे मीना दुलहा मेरा  
 न जानो बजबज मे हूरो  
 जिम मे बनवरी गज दीना दुलहा मेरा—इन्हो ---  
 न जानो बजबज मे हूरो  
 जिम मे दुलहा मेरा दीना दुलहा मेरा—इन्हो ---  
 न जानो मोर मीनों मे हूरो  
 जिम मे बजबज मेरा मीना दुलहा मेरा  
 इन्हो मीनों मे मे मीना ---

दूसरी तरफ :-

दादरा

कहां जायेंगे यार नैना लगा के कहां जायेंगे यार  
 जायेंगे यार कहां जायेंगे यार नैना - - -  
 तुम्हारे देखने से हमको ताप होती है  
 इन आँसुओं में दुनिया हवाय होती है  
 अगर न जिन्दगी मेरी सुराय होती है—कहाँ - - -  
 जवान सुनो भी न भी अर्ज मुहुमुह्या के लिये  
 नजर की छँविया खलने लगी मना के लिये—कहाँ - - -  
 कहा जो मैं ने कि मेरा कहा नहीं करते  
 तो फिर दिखाई मे बोने कि हाँ नहीं करते  
 निकोई मुलकियत हुय हाजदा नहीं करते  
 कहां जायेंगे यार - - -

—(•)—

P 4412

ग़ज़ल व ख़तराली

पी० ४४१२

जाने क्या माही की आँसुओं ने इगारा कर दिया—जाने - - -  
 नजर मग़िब आज़ हा मग़िब तहशा कर दिया—जाने - - -  
 कर तो था मैं मयका देने उम ग़ाहिय की तरह  
 आज़ माही ने मुँह क़तर से दूपा कर दिया—जाने - - -  
 दिवहो आगार मोहब्बत के मज़े खाने लग  
 उमक मय क़ुवचा के जीने दद रदा कर दिया  
 काम मूनी का किया था कौन मा मज़र ने  
 छिप लता पर तू ने हर ज़ाई का ख़याल कर दिया  
 जाने क्या माही की - - -

दूसरी तरफ :— गज़ल क़व्वाली

नाज़ भी होता रहे होती रहे पेदाद भी  
 सप गयारा है अगर देते रहे फ़रयाद भी  
 यह क़सा होकर फे बोने अब न आयेगे कभी  
 यह भी कह दो अब न आयेगी मुन्हारी याद भी  
 नाज़ भी - - - - -

उम मे भिन कर गोज मे घेदद यह उरुदा खुला  
 भोली भोली शरू पाले होते है जल्लाद भी  
 बाग का जाने का देता है अब लालच उसे  
 फ़ांम कर दो चार धूल धूल फ़म गया सैपाद भी  
 नाज़ भी होता रहे होती रहे पेदाद भी

— : ७ . —

P. 4058

गज़ल देश

पी० ४६५८

न पूछो बसल क्या शय है कि जितनर दम निरुलता है  
 यह हुच्चा गोशा क्या अरमान है जो दम निरुलता है  
 न पूछो बसल क्या शय है - - - -

सबर कर घर से अब वह कातिल आराम निरुलता है  
 तड़पते हैं हजारो सक्नों का दम निरुलता है । न पूछो - - -  
 यह कहते हैं कि मरता हूँ तो फरमाने है ए हसरर  
 मान्जुब क्या है हम पर सक्नों का दम निरुलता है  
 न पूछो - - - -





दूसरी तरफ :— भजन देश

बिना रघुनाथ के देगे नहीं दिलको डरारी है  
 श्री माता लू क्या पृथे अकथ रिग्ने उजाड़ी है  
 हमारी मातकी करनी सकल दुनियां मे नियारी है । बिना ---  
 भगत मोटे धरत ऊपर दगा तन की बिगाड़ी है  
 कहाँ हें राम लक्ष्मन और कहाँ सीता बिचारी है । बिना ---  
 बजा जब लू बका डूँ। एवह होने तयारी है  
 शरण रघुनाथ के पाऊ यही दिलमें बिचारी है । बिना ---

## मिस अमीर जान

P. 182

दादरा पीन्डू

पो० १८२

कहो गुदियां कैसे कटे मारी राल । कहो ---  
 मर्यां नहीं आते जिया धरगाये । कैसे कटे ---  
 मेरे बेहरा मे प्रीति ओं टानी कयट्टे न मानी बाल  
 कहो गुदियां कैसे कटे मारी राल ---

दूसरी तरफ : - रोहता कृत्याली

मानेन बना के भाई क्या साजबाब मेहरा ।  
 मेहरा मे है अदा के बह इन्कलाव मेहरा ॥  
 मंती बमक मंड हें कवियां मटक रही है ।  
 दूँकल म् टा मंड हें क्या साजबाब मेहरा ॥  
 मेहरा बना म्गामल मेहरा म्गल की म्गमल ।  
 अर्पित हें तारे बर्गल और है म्गदाब मेहरा ॥

P. 242.

गुज़ल दादरा

पी० २४२

यहमाने वाले प्यार के सच पार बन गये ।  
 मनमाने वाले मुज्त गुनहगार बन गये ॥  
 हनने दिया था दिल उन्हें दिनदार जान पर  
 वह लेने मेरे दिल को दिने आज़ार बन गये  
 हुये हँदर से जो आवाज़ है सीना मेरा ।  
 हुये हँदर दिल का नगोना पार बन गये ।  
 उन गुन धर रात को आती नहीं है नौद  
 बिस्तर के तार हज़ में मेरे पार बन गये

दूसरी तरफ़ :— गुज़ल क़ुवाली

लियू क्या मना तेरी शोहदी किया हज़ ने तुझको मलाम है ।  
 मुदा बहता मुझ पे दुमह है तेरी जान आली मुझाम है ॥  
 तेरी आर्ष आली मुझाम है ग्राहिदी जहाँ तेरा नाम है ।  
 मुझे हज़ ने भेजा पयान है कि तू दो जहाँ का ईमान है ॥  
 लगा दिल में हिज़ का नगतर दिया इग़ ने मुझे जिगर ।  
 लियू क्या मना तेरी शोहदी किया हज़ ने तुझ को मनाम है ॥

P. 337

दादरा क़ुर्वा

पी० ३३७

ख़र ही नहीं उम जालिम को मेरी ख़र ही नहीं  
 रो रो के अपनी आर्षों ने दग्ना बहा दिया  
 सब है किमो के दिलकी किमो को ख़र ही नहीं—उम ---  
 गिज़ा पम तेरी तरबूह का है इरंगी  
 वह दिन नहीं वह दान नहीं वह नज़र नहीं—उम जालिम ---



दूसरी तरफ :— जिन्दा क़ब्राली

शुक्र पर है दिमाग उनका ज़मी के रहने वाले है  
 सुरा ये मोह पैहर गारी दुनिया मे निराले है  
 तुम्हारे हिस्से क्या क्या गुजस्ती है मेरे दिल पर  
 ज़िगर पर आह है हम में ज़मी पर मेरे नामे है  
 कभी वो नाज़ करने है कभी तुम प्यार करने हो  
 तुम्हारी निज़ा ने हज़ारों मार खाये है  
 न हम सा दिल है न नाज़ तुम बघानी है  
 वो भूगोई का दम भरने है बस देल भाये है —शुक्र पर ---

## मिस असगरी जान

P 155

सुझल

घो० १५५

राज्य किया मेरे बालों के पेशवा किया ।  
 मर्यादा राम कुबामन का इन्तज़ार किया ॥  
 मुला है तेरा को क़ानिय मे पेशवा किया ।  
 अगल बंद मंग है ना मे मुबाद हम मे वार किया ॥  
 हुमा हुमा के जो शर कयार पारक वार किया ।  
 नरसिंहपुरी मुन्दे मे के क़दमत किया ॥ राज्य  
 मन्द का कयार मे इन्तज़ार हम मे हुमा ना  
 बंद कयार किया मे क़दमत हो इन्तज़ार वार किया ॥  
 बंद हुमा मे कयार हुमा मे वार किया हुमा  
 मे हुमा मे कयार किया हुमा वार क़दमत किया ।

यह माना हनने बीमारों मोहकृत को दवा तुम हो  
 न आपे काम जब करने तो ददें सादवा तुम हो  
 बर्रा के हन हैं मृजिद वानी जारो जरा तुम हो  
 निभेगी किन् तरह हन बावरा हैं येवरा तुम हो  
 हने यह सऊ भी मजुर हैं तुम ईर को चाहो  
 बनाये ददं उल्लस के तो लहजन आगना तुम हो  
 खुदा को भी पसन्द आता नहीं नाजो गहर इतना  
 न बोलोगे किनी से तुम तो क्या कोई खुदा तुम हो  
 भरोसा ईर को होगा तुम्हारी आगनाई का  
 यही तरजे बर्राई हैं तो किन् के आगना तुम हो

—:०:—

P 8575.

दादरा

पी० ८५७५

येरी बाला यार गली में गवनवा नांगे ---  
 एक तो निरहिया का पहरा । निरहिया का पहरा  
 दूजे खग कोतवाल । गली में गवनवा ---  
 एक तो मैं बडिन की बेटो । बडिन की बेटो  
 हां दूजे भद बदनान । गली में ---  
 एक तो मैं बडिन की बेटो । मैं बडिन की बेटो  
 कोहा --- गली में ---  
 एक तो मैं बडिन की बेटो । मैं बडिन की बेटो  
 को हा हा वाद वाद ज वाद  
 दूजे भद बदनान गली में ---

( ओहो हो । गली में गवना - - -

। आरे सिङ्गी के रमने जानी । जानी हमारे साथ निम्न क्यो

आहा हा हा याद दिहानी हो जानी बाह बाह ।

गवना संगे - - -

एक तो मैं बहिन की पेटी । कूले भयू बदनाम

गली में गवना - - - । बाह बाह भई बाह ।

दूसरी तरफ़ :—

दादरा

सोने दे बाबल हमें न जगाव - - -

बहाव बँहें पुरवैया सजनी गपू अ गवना में सोय

सोने दे हमें - - -

मेहदी खुदल मैं जो गई सगा हगुनियां में कंट

( आरे खुदा का बाबल कल सोजाना आज तो आगे

फिर खुदा जाने बाबल । सोने दे हमें न जगा । आरे बाबल

सास मोरी आरे कन्द गरवाने सेर्या का दरद है रे बाबल

साने दे । सोने दे हमें - - - आरे बाबल

सास मोर

कुत्ते ही आँसु इकट्ठे के बीमार हो गये।  
आँसु बीमार हो गये।

पर भी न आये थे कि गिरस्तार हो गये।  
जाहिद बुराई क्या है हस्तियों के इकट्ठे।

अच्छा निजा जो नाम सुरीदार हो गये।  
आँसु सुरीदार हो गये।

दिन में कुत्तों का इकट्ठा है सब पर सुदा का नाम  
अब क्या बनाने किन्के गुनहगार हो गये।

आँसु गुनहगार हो गये।  
जिना खिच हम उनके मोहकनत हुई सेवा।

परदेज़ करके आर भी बिनार हो गये।  
आँसु बीमार हो गये।

कुत्ते ही आँसु ---

दूसरी तरफ़ : —

गुज़ल

पहले तो मुझे वादा तुम मेरा कष्ट करना। ;  
कुत्तार हो जो चाहो छिड़ जाओ ज़रूर करना।

वोह ज़रूर तो कर दंडे छान्दान न सोचे कुत्त।  
प्यारा रहे है दिन में अब चाहिये क्या करना।

इन्नाक मेरा पे प्युत अब हाथ न है तेरे।  
बेरेहन न हो जाना कुत्त सुक़ सुदा करना।

बेरेहन ---

पहले तो मुझे वादा

P 8085

दादरा

पी. ८

जगाय लावो शाम सोरै श्रद्धारिया - - -

हमारे जगाये से सैयां नहीं आगे

जगाय लाये डाल के गले बहियां

जगाय लावो शाम - - -

हमारे मनाये से सैयां नहीं मानीं

. बाह जो बाह अब तो जागैगे

मनाय ला मार के पुलकड़ियां

जगाय लावो शाम - - -

बाह प्यारी जान क्या मारही हो

दूसरी तरफ :—

दादरा

बांके नयनन वाली गोरिया - - -

बाल लगायो बगीचा लगायो उसमे राखी क्यारी

उम क्यारी में क्या बोया । इगुल मोहब्बत मारी

बांके नयनन - - -

. इसी बजह से सैकड़ों को पकवान कर दिया है । जान मन

बांके नयनन - - -

महला उदायो दोमहला उदायो उसमे रखी सिन्धी

उम सिन्धी में गोरिया बैठी थौंके रपहा साड़ी

बांके नयनन - - -

. थौर भी गजब कर डाला

बाल लगायो बगीचा लगायो उसमे राखी सिन्धी

हम सिन्धी में गोरिया बैठी थौंके रपहा साड़ी थौंका

बांके नयनन वाली - - -

# मिस अर्जुन और लतीफन

P. 5709.

रसिया

पी० ५७६६

बदन तने आजाइयो बटीले काजल वाले  
 जाली वो हरो री रझादे, हरो री रझादे  
 हरो रझादे पीलो रझादे छतिपन लाल रझादे—बदन तने ...  
 मोनेकी धलियामें जुमना परोमा बदन तने आजाइयो बटीले काजल वाले -  
 मोने का गइया गइया जन पानी—गइया जल पानी  
 बदन तने पी जाइयो बटीले काजल वाले—बदन तने आजाइयो ...  
 पांच पान का बीड़ा लगाया—बीड़ा लगाया  
 बदन तने घया जाइयो बटीले काजल वाले—बदन तने ...  
 धुन धुन कलियां में मंजे दिझार—मंज विझार  
 बदन तने मो जाइयो बटीले काजल वाले—बदन तने ...

दूसरी तरफ :-

रसिया

जालीदार घुघटा न खो नूंगी—मैं जालीदार ---  
 गिरि भी हमरा छप्पन भी हमरा—मैं पर पर छप्पन जीना बहनेकी—मैं--  
 गिरि भी मामू छप्पन भी मामू—मैं पर पर छप्पन जीना बहनेकी—मैं--  
 गिरि भी मनदन छप्पन भी मनदन—मैं पर पर छप्पन जीना बहनेकी—मैं--  
 गिरि भी जेठा छप्पन भी जेठा मैं पर पर छप्पन जीना बहनेकी मैं ---  
 गिरि भी मामू छप्पन भी मामू—मैं पर पर ... मैं ...

P 6178

रमिया

पौ० ११७८

कावे वे दीदी पड़गई के लहयो लाई मोय—लहयो लाई मोय—कावे ---  
 एन एन के बमवा के छोरा रोटी रोई मोय  
 लीन दिवा मोन के रड गय पहिने लिवाइऊ मोय—कावेय ---  
 एन एन के दीदी के छोरा बानी भणई मोय  
 लीन दिवा मोन के रडगय पहिने दिवाइऊ मोय—कावेय ---  
 एन एन के बमवा जो के छोरा बीहु लगाई मोय  
 लीन दिवा मोन के रड गय पहिने बवाइऊ मोय—कावेय ---  
 चाग चाग इय कावे दीदु लावे जेड  
 जेड बिबाग कवा छे पच्छु वे रड गवा पेड—कावेय ---

दुमारा ललक

रमिया

दुमारा रड रमिया कही गवा गे दुमारा रड रमिया  
 कावे का छोरा चादु मे र रमिया कावेय जेऊ लगी रमिया-कही  
 कावेयि लुमा कय लया रमिया लया के चाउक लया रमिया कही  
 लुमा के का के लया रमिया लया के चाउक लया रमिया कही  
 कावेयि का दुमारा ललक लया रमिया लया के चाउक लया रमिया कही  
 लुमा लया रमिया लया रमिया लया के चाउक लया रमिया कही  
 लया के चाउक लया रमिया लया के चाउक लया रमिया कही





P. 4661.

दादरा

वी० ४६६१

ना जाइये रे बिना कुलनी पलङ्ग पर ना जाइये रे  
 टारे ससर मेरे भर्त करत हैं—टारे समर - -  
 ना जाइये रे बिना मोरे कुलाये घर ना जाइये रे—बिना कुलनी - - -  
 टारे जेठा मोरे भर्त करत हैं—टारे - - -  
 ना जाइये रे बिना हिस्सा बढाये घर ना जाइये रे—बिना कुलनी - - -  
 टारी सास मोरो भर्त करत हैं—टारी सास - - -  
 ना जाइये रे बिना सवाये मिटाये घर न जाइये—बिना कुलनी - - -

दूसरी तरफ :—

दादरा

गाड़ी मेरो रोको ना बे रसिया—गाड़ी मेरो - - -  
 गाड़ी चलत मोरा बाला हिलत है बाला बालम का बे रसिया—गाड़ी - - -  
 गाड़ी चलत मोको भूष लगत है—वेड़े मधरा के बे रसिया—गाड़ी - - -  
 गाड़ी चलत मोको प्याम लगत है—पानी जमना का बे रसिया—गाड़ी - - -  
 गाड़ी चलत मोको नींद लगत है—मेज प्लो की बे रसिया—गाड़ी - - -  
 गाड़ी चलत मोको गर्मी लगत है—पन्ना पृन्नों का बे रसिया—गाड़ी - - -

तुम जान नन हनारी जानी न क्यूँ क्या क्यूँ—तु . . . . .  
 तैरे हाथ में गहरी गला न क्यूँ क्या क्यूँ  
 तैरी नीटी नीटी बतिपां निहन न क्यूँ क्या क्यूँ—तुम जान . . . . .  
 तैरे हाथ में गिलोरी घोड़ा न क्यूँ क्या क्यूँ  
 तैरे होठों बिच ताली लहन न क्यूँ क्या क्यूँ—तुम जान . . . . .  
 तैरे हाथ . . . . . तैरी नीटी . . . . .

दूसरी तरफ़ :—

दादरा

हयें दुबो न डिपर गौर गौर गौर गाल  
 जो तो यह कह कि शपे हिज में मनमाने हैं  
 बापदा बार खुदा सम कर वह जानें हैं  
 गुचे गालों का जो दोनों को निजा पाते हैं  
 कम निनी कहा दगावाज़ कहा तो शनते हैं । हयें दुबो न . . . . .  
 हिना देख रहा है कम ज्ञानि ज्ञानि  
 तुम को दर है कलें मर जंप न बानि ज्ञानि—हयें दुबो . . . . .  
 जो तो यह  
 बापदा

P 6508

गुण्ड

पौ० ६५०८

आगिऊ हुंर हें अवस्था समदार देख कर ।  
 खना हमारे हुण्ड पर सनदार देख कर ॥  
 हम दे रहे हें इगु की कीमत में मरुद दिय ।  
 वह नाह कर रहे हें सगेदार देख कर ॥ आगिऊ ॥  
 माले से कल कर खाली हर रोज मील भी ।  
 तेरे मरीज इगु को बीमार देख कर ॥ आगिऊ ॥  
 कालिय मे अपनी मील मे आगाह होगया ।  
 गदु गग कऱुक उटो तेरो सववार देख कर ॥ आ० ॥  
 कालिय ने तग मगन रहमल वे पेर कर ।  
 होवी मनाई सून की डर धार देख कर ॥ आगिऊ ॥

दूसरी तरफ . —

गुण्ड

आउव जान उलनय मे मेरी वही हुंर है ।  
 कि जूयको की दिल पर वही हथकड़ी है ॥  
 मेरी कुवर टोकर मे हमवार कर के ।  
 खडा बेगी खन मे दुरी वऱु है ॥ आउव ॥  
 तेरो कुदु खला है न लंज की कालिय ।  
 आउव ही मेरी आउव मटो लऱु है ॥ आउव ॥  
 आउव ही के हाथों मे निखरेगी आगिण ।  
 आ तेरा मरु तेरी दिल मे गऱु है ॥ आउव ॥  
 खड से मरेदा नु खमल की खाली ।  
 कि बीमार मेरी वऱु नु व १ है ॥ आउव ॥

P 6502.

भरथों

पी० ६५६२

अहसन से पूरा मैंने क्यों लकड़ा एगन को छोड़ दिया  
 फुल्ल ने तेरी घेरन किया आगिऊ ने हलन को छोड़ दिया ॥  
 अब नज़र शिमो पर दाते क्या हम आगों पर तेरी सदा करके ।  
 जड़ल में हलन को छोड़ दिया ॥ अहसन ॥  
 डलक जो सनमने उलटो स्पः मे—  
 सूरज ने गहन को छोड़ दिया ॥ अहसन से जो० ॥  
 सारी उमर मेरी सोने गुज़री  
 चाँख खुली जय रहने तनरो छोड़ दिया ॥ अहसन० ॥

दूसरी तरफ़ :—

गज़ल

चोर कर सोना जाँ दिल तो नज़र दिलवर कर दिया ।  
 दूर एरू पहलू से गोया दर्द का घर कर दिया ॥  
 चाँद मेरे चाँद की क्या ताप लागेगा भला ।  
 ज़द जब मुझदि को सूरत दिखा कर कर दिया ॥  
 एरू तो पहिले ही यह घुत सगदिल मयहूर था ।  
 बुद्ध अदूने धौर उस पत्थर को पत्थर कर दिया ॥  
 घोर कर०

P 0612

दादरा

पी० ६६१२

साँवरिया ते हम से माँहें बने रे ।

बुलायो मेहरा को सजाये कोलिया, बुलायो सइयाँ को मै' सइके क्यो रे ।

बुलायो चार सलिया सजाये सत्रयाँ, बुलायो रमियाको मै रममें भरी रे ।

बुलायो मेहरा को सजाये कोलिया, बुलायो सइयाँ को मै गोने क्यो रे ।

बुलायो रंगोजया रंग लाके आयो बुलायो सइयाँको मै केयो क्यो रे ।

दूसरी तरफ़ :

दादरा

क्यो केजे छुटे रामा चाँद जिया जाये । चाँद जिया जाये

अब लागी लव कोऊ न जाने

अब लागी दुख देह । हाँ रे जिया जाये

देहा—सुर्गध्व मीन चडू है कि मे जाँ सेकर टवू ।

चाँद क्योडा को यद हिद है कि मेगी बान रंद ॥

लोग लव जया है क्योय कही जाली है ,

लव जो दिखे है तो क्य कही कदा चाली है ॥

चाँद जिया ०

P ०७५१.

गज़ल

पं० ६६५१

इसा यह मा से मेरा ज़लुम दिन्दार हो जाना ।  
 वह बेहोशी में जाहिर मौत के आगर हो जाना ॥  
 जो माने करता है वह खोज बदनामी से करते हैं ।  
 दुहाई देख राझे इश्क का इज़हार हो जाना ॥  
 लिख कर मेरी मर्त से यह बोले उफ़े तेरी नादानो ।  
 इन जाने हैं कम इत नौर से हुजदार हो जाना ॥  
 सुने नाह कमखर आर की कुरत में इतनी है ।  
 कम आरे बन्द करना आर का दीदार हो जाना ॥

दूसरी तरफ़ :—

गज़ल

आँखों में कम गई है उम सुद सुना की सूत ।  
 ना आटना बनी है हर आटना की सूत ॥  
 और आँखों के सामने है और आँखें कमती हैं ।  
 इक घोपदा है पाँचो इन जितने गर की सूत ॥  
 भली नहीं है नियत और धरती नहीं है आँखें । आँखें - - -  
 पाँचो है सुने ज़ातिल उर जिन बला की सूत ॥  
 और अज़ना सुदा की कुरत है देखने के ज़ातिल ।  
 इक वे बला की सूत इक बावला की हालत ॥

P 6674

दादरा

पी० ६६७५

जब काला मोरी गलियों में आया, दिवनी में छाई अब धरारी दुव्या

आ हा हा हा । दुव्या में तो हर गई ।

जब काला मोरी दिवनी में आया, आंगन छाई अब धरारी दुव्या ॥ अहा०

जब काला मोरी आंगन में आया, कमरे में छाई अब धरारी दुव्या ॥ अहा०

जब काला मोरी कमरे में आया, सेजों व छाई अब धरारी दुव्या ॥ अहा०

जब काला मोरी सेजों व आया, तो लवना व छाई अब धरारी दुव्या ॥ अहा०

जब काला मोरी लवना व आया, तो जीवन व छाई अब धरारी दुव्या ॥ अहा०

दुवरी तरंग

दादरा

अकालों में तब हूँ बही वार मेरा

हाथ में हूँ ही काज में मोटा, नःडिया के भङ्ग मोरे बही वार मेरा ।

हाथ में हूँ ही काज में मोटा, धरिया के गाय मोरे बही वार मेरा ।

हाथ में हूँ ही काज में मोटा, धरिया में हूँ वही बही वार मेरा ।

हाथ में हूँ ही काज में मोटा, भरिया के गाय मोरे बही वार मेरा ।

हाथ में धरिया काज में मोटा, लवना के गाय मोरे बही वार मेरा ।

साड़ी विपदा से राजा भुगत पावे । साड़ीः  
 बची साड़ी पेठ पुनारे पड़ी साड़ी गीता ।  
 पारसे मारे बन्धी भल्लार से मारे टोना ॥ साड़ीः  
 अथ वीन जिनाता है, सुनी अथ वीन जिनाता है  
 गारी हो के हम तब धी मय मोमों की मय मोमों । साड़ीः  
 मेरे पानू में जो बंधे तो मिभन कर बंधे  
 तां दिन मादान की आदत है निचन जानरी ॥ साड़ीः

दूसरी तरफ़ :

दादरा

पीटर भई द्यूवा मइयां बना  
 पार मीनरा की गनी पुरत है । पीटर भई द्यूवा

दादरा

पी० ६७१०

गहर बिय जाये मन मेरा गिरहिया, तुम गिरे जाय मन . . . . .  
 हमरे गिरहिया की यड़ी यड़ी अखियां, एरमा गहर बिये जाय मन . . . . .  
 हमरे गिरहिया की बाली बाली जुलुए, पगिया गहर . . . . .  
 हमरे गिरहिया की मन्दी मन्दी दलियां, मि.मिशा गुलम . . . . .



1. 10074

दादरा

पी० ६१४४

अब काला मांगे गजियां में आया, डिपटी में हारि अ धवारी दुव्या

आ हा हा हा । दुव्या में सो अ गये ।

अब काला मांगे डिपटी में आया, आंगल हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा १

अब काला मांगे अंगल में आया, कमेंट में हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा २

अब काला मांगे कमेंट में आया, सेजों व हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा ३

अब काला मांगे सेजों व आया, सो खपना वे हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा ४

अब काला मांगे खपना वे आया, सो गेंडा व हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा ५

दुव्या गे ताल,

दादरा

अबकरी में लख गल कली वार मंग

दुव्या में हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा ६

दुव्या में हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा ७

अबकरी में लख गल कली वार मंग

दुव्या में हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा ८

दुव्या में हारि अ धवारी दुव्या ॥ आहा ९

साड़ी गिरना से राधा भूला जावे । साड़ीः  
 बड़ी साड़ी पे चुनने पड़े साड़ी गीता ।  
 पारसे मने बन्धो भालार को मने रोता । साड़ीः  
 धर बीन दिनाता है, एही धर बीन दिनाता है  
 गारो ही वे इन तक धी मर मोरों को मर मोरी । साड़ीः  
 मने पदु में जो बड़े तो निभन बन बीने  
 हां दिन गदाम की आदत है निचन जानेही ॥ साड़ीः

दूसरी तरफ़ : - दादरा

पीहर भी दूना सायां बना  
 धर महीनवा की गली पड़त है । पीहर भी दूना



गजब किन जाय मन मरा निराहवा कुनम किन जाय मन  
 हुनम निराहवा को ब. १ व. १ कायवा हुनम गजब किन जाय मन  
 हुनम निराहवा को काया काया कुनम निराहवा गजब  
 हुनम निराहवा को काया काया कुनम निराहवा गजब



P. 7095

होला

पॉ० ७०६५

मारत मारं ननन मां पिचरारो  
 दया में तो ऐसे खिलाड़ी स हारो—मारत मारं . . . .  
 गाढ़ा रंग लगे हृत्तिपन मां । बारी लगी पिचरारो  
 जाश्मा बचन मारा अंघरा फटन है तुम जोते में हारो—मारत मारं . .  
 एक हाथ मारा अंघरा रं परड़ा दूजे हाथ मोरो मारो  
 तोजे हाथ मोरो अंगियारं बोच—हां बालन ननन मां—

दूसरी तरफ़ :—

हालो

फाग खनन बंम जाऊ मारो रो हर के हाथ पिचरारो रहत है  
 सब को रं बन्द रंग में रे बोरो देख हमारी घूदर गुलनारो रहत है  
 लाला हमरो समां हमरो घूदर—होलो खनन बंम जाऊ —  
 होलो के खिलाया समक हालो खला इम रं पुज राधा प्यारो रहत है  
 फाग खनन बंम जाऊ —

—(०)—

P. 7372.

दादरा

पॉ० ७३७२

गगरो मोरो तोड़ी रे धारं भोलं  
 घड़त अटारो मोरं देखरा ने देख—मंरं हां मोरं देखरा न देख  
 हां शरम से में मर गई रे—धारं भोलं : ओहो शरम स मर गई रे धारं - -  
 घड़त अटारो मोरं संघां ने देख—घोलो बन्द खुल गई रे—धारं भोलं  
 गगर मोरो तोड़ डालो रे— सुभान अलाह )

१६. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 १७. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 १८. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 १९. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २०. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २१. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २२. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २३. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २४. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २५. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं

श्रीकृष्ण उवाच

१६.१६

१६. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 १७. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 १८. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 १९. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २०. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २१. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २२. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २३. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २४. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं  
 २५. अहंकारं कुरुष्वानुभवंतु मया प्रोक्तं

P. 7585.

दादरा

पी० ७५८५

रूम भूम से घुंगरू बाजे रसिया, गोरि सी मेहरया मेरी रसिया  
 जैसा तारा बमरता आवे रसिया, काली सी मेहरया रसिया  
 जैसे बादल गरजता आवे रसिया, रूम भूम से—  
 टिंगली सी मेहरया मेरी रसिया, जैसे गेंदा उड़लता आवे रसिया  
 आहा हा गेंदा उड़लता आवे ओहो गेंदा, रूम भूम—

दूसरी तरफ :— मिस खुशदजान—फजरी

अखियां ऐसे जियारा मारे बजरा काहे देती हो  
 अजर रमोली बितवन है मन छीने लेती हो, अखियां - - -  
 यही मुख्यत तन मन हारों लीने लेती हो, अखियां  
 अजर रमोली बितवन है मन छीने लेती हो, हां, अखियां - - - -

P. 7847

गुजल

पी० ७८४७

इलाज की नहीं हाजिन दिलो जियार के लिये  
 बस एक नजर तेरो काड़ी है उमर भर के लिये  
 खुदा ने तुझ ही बनाया है नाज़गी हाजिन  
 अदा की तू है मोजू तेरो बन्ध के लिये, इलाज - - - - -  
 मैं अरगी जान की मुट्ठी में लंके आया है  
 यह नज़र है तेरो जादू भरी नज़र के लिये, इलाज - - - - -  
 जलील दोद में ख़ुश से खुश समझे  
 लहू की बूद न होनी दिलो जियार के लिये, इलाज - - - - -







दूसरी तरफ :—

राजल

आखी में समाजो पदों में रहा करना ।

दरया भी हमी में है मौजों में रहा करना ॥

यह पहिला विरियमा है इन वर्ष सितमगर वा ।

आज हमने मिला करके कल उसने अदा करना ॥

बीमारो मोहक्यत को गर होयमें लाना हो ।

ज्ञानो पे लिखा करके दामन से हवा करना ॥

हम यममें हैं बल बल के हर काल पे चढ़के ।

सुम बूट यज्ञ बन कर पूलोंमें रहा करना ॥



P 7013

राजल

घो० ६३१

गुरे शवाव लिने हुमन यार बेदा हो ।

हलाही जल्द चमन में बहार पंदा हो ॥

कहो ता काट कर मर मर वु उनक कयमों पर ।

कहना नरक में ३-१ ॥ ३११ पन्ना ३१ ॥

३११ पन्ना ३१ ॥ ३११ पन्ना ३१ ॥

३११ पन्ना

३११ पन्ना ३१ ॥ ३११ पन्ना ३१ ॥



दूसरो तरफ :—

दादरा

हाफिज सुदा तुम्हारा आँधो दिलर दिल धारा  
सोने पर आत मेरे राजर बना दुधारा । हाफिज ---  
इलाही सूर के रग आत बेदव है ।

ठपक रहा है कई दिन से धादला दिल का ॥  
जो हाल कचये जाना का लोग पूरेगे ।

कहूंगा सुट गया रहने में काफ़िला दिल का ॥  
भूल न जाना हमको दिल धारा  
जोने से बनना होगा बिनारा  
जिंदगी ने गरकी बफ़ा दिल रवा तुमसे मिले गे आ  
हाफिज सुदा - - - - -



19 (16) 4

भजन

पौ० ई०

निश्चय प्राण काया कोई रोई—दोः चने निर्मोही ।  
मैं जानू काया सग सलेगो—या कारण मेने मल मल धोई ॥  
ऊंचे मोचे मन्दिर दूर—गाय भोग घर धो ॥  
आत कुलकनो लया हा १—दो १ दो ३३ का जो३३—दोः चने - -  
चार पन क काइ ब ड—बड मड का जो ॥  
न मुन मरउठ न नाने—क ३ उ नम फलन नाना—दोः - -

दूसरी तरफ :

मज्जन लायनीं

काम रूप में दो ही का उपदीष्ट प्रभू ।  
 ज्यों काही भावना ज्यों हेतु निवृत्त भू ॥  
 मोह को दोषों को मज्जत हुन्दा उपासक सधेदान ।  
 राम चन्द्र के भगत पुराणे मोक्षराम भई मोक्षराम ॥  
 नाचो कहने लगा कि यह तेरा करता है जानन सेव ।  
 ब्रह्मचर्य उठा कि नहीं जो दौड़ विद्वान लड़ा तजेव ॥  
 दूरी दोषों धुई मुहना—दुपरां धारो क्षमन जेव ।  
 एतत् मनना ह्य दोषों को हार ह, साधन पाजेव ॥  
 दमार्थो न मनस सिद्धा हि शान्तिर मोक्षे सिद्धा वादान ।  
 राम चन्द्र के भगत पुराणे मोक्षराम भई मोक्ष राम ॥



P 6711

गुड्डल

पृ० ६९११

क्या शरत भी गजद्विज प्रपन्न ज्यों ही जायेगा  
 क्या शरत भी छाह का शोका धुंधों ही जायेगा  
 हार जब क्यों कर बोज ही प्यारे प्रपन्न के शर  
 यह न शक्यों भी कि दुःखनत कामनी ही जायेगा  
 क्या शरत ही शरत 'द्विज प्रपन्न ज्यों ही जायेगा  
 मानन ही उर लयक वा मरु प्रपन्न हेतु व  
 'द्विज न 'द्विज लयक शक्यों न ही जायेगा ।

दूसरी तरफ :—मिस दुलारी और मास्टर जमाल नाटक महाभाग

तेरा चमार कहा है—ओहो बड़े महाराज पूजा में बैठ भोग का  
का समय हो गया । जो मैं चमारों वाले कुएँ पर जाऊँगा तो और जो  
देर होंगे—इसी कुँवे में एक दोस्त भी भर लूँ कोई देखना तो भोग  
थाँ हो । कोई को मारेगा ।

कह दूँगा कह जोड़ कर जो मारंग लोग

अभी लगाना है हमें मारावण का भोग

( सवाल व जवाब )

कौन है रे कुएँ पर ! मैं हूँ जो सेवा

कौन सेवा ! तेरा चमार का पेटा—

तुझे इस कुएँ पर चढ़ने का स्थाने हुकम दिया है ?

झियो ते भी नहीं ।

तू मूएँ देह—क्या तेरी आंखें पट गई थीं ? देखना नहीं, कि मन्दिर का  
कुत्ता है न कि चमारों का कुत्ता ?

वह तो टीका है पर चानी चमारों के लिये नहीं चाहिये था ।

चमारों के लिये नहीं चाहिये था तो क्या चमड़े को डालने से चाइलों  
का मुँह पलाना था ?

नडा बाँटे । टाड़ने का भोग लगाना था ।

क्या नडा खर का नडावण जो प्रयोग का भोग लग—मुख नीचे कौन भरी  
चमार सब मारने का भोग लगाना था ।

जानना है मारने का भोग लगाना था ।

जाता है मारने का भोग लगाना था ।

भला होगा—सतीसों के साथे दया—

कोरे जोरे बर्माने मुण्ड पेहवा—भला होगा - - -

समझाइ सी अभी पिटाइ सी अभी ! बरो बरो मुम मत चाही

बेसी बेसी दिवाई दिखई मुभ—कोरे दीड न साथे आई हुकं ।

हुई पर एना सो जे गिन गिन के भारो ।

भला होगा ! सतीसों के साथे दया ।



P 0054

भजन

पौ० ६६५

हां मैया हमें डे बतनाय वहां गये राम लखन सीता

आवन देखा भक्त को आरति सीनों सजाय ।

मुन्त आरति उतार के गौर सीनों पिटाय ॥

भक्त बड़े भाता—वहां गये राम लखन सीता

राज बरो गद्दी पर बैठे भक्त बरो साथे विचार ।

अप का पढ़न बार बार कि होगया होनहार ॥

“ दुबन दिया बन के जाने का ” वहां गये - - -

एन भाता के बचन यह भक्त गये घरनाय ।

नैनन उदरे नौर भरा मुख से निहलन हाय ॥

जो अप हन बैसे विधाता—वहां गये - - -

रिता हरन मैया का दिहून यह दुख सौं न जाय ।

एक दिन रोते काठे बारह बरन बननास ।

भक्त देवो बनको के भाता—वहां गये - - -



P. 7011.

दादरा

पी० ७०११

हम का खूब दिने जइयो जब ही तुम जइयो विदेमरा का  
जब रे पिया परदेस सिधरियो हमरो छथ न फिरइयो ।  
जब ही - - - - -

सास नन्द मोरी जनम की बैरन उन का अलग किये जइयो ।  
जब ही - - - - -

छोटा देवरवा थारे का छलयलिया उनका सग लिये जइयो ।  
जब ही - - - - -

छोटी ननदिया महा की दिनलिया उनका गान भिये जइयो ।  
जब ही - - - - -

दूसरी तरफ :—

दादरा

आआं सरयी आआं देखे महन्दी की बहार ।  
सास मेरो थोली कि बहु घरमें परा साग ओ हो हो हो ।  
मैं भोली समझी कि बहु घरमें लगा आग वाह वाह ।  
अरे वाह रे भोली अरे वाहरे नन्हों ।  
सास मेरी थोली कि बहु चावल फटके ते आ हा हा हा ।  
मैं भोली समझी कि बहु चावल पटके दे वाह वाह  
अरे वाह रो भोली अरे वाह रो नन्हों ।  
सास मेरो थोली कि बहु कपड़े धुलाला आ हा हा हा ।  
मैं भोली समझी कि बहु कपड़े जनाला आहा हा हा  
अरे वाह रो भोली अरे वाह रो नन्हों ।  
आआं सरयी - - - -



P. 7032

पील्डू

पो. ७०३२

आत्र दिवार को गने से लगाये गे  
 दिन की लगी बूझाये गे सोने से सोना मिलाये गे  
 आत्र - - - -  
 गुन बेवार के लरे दिनदार के  
 दिन भर भर के बोसे उगाये गे । आत्र - - - -  
 लखदी जात्र मिला में दिनदार से ।  
 आने गम लवार से गुन बेवार गे  
 हां हो न रंगा कि हातात्र मिया  
 होवर को गौ गायों के दू जाके दिस  
 हां जाके गुनगन में दिन हो बह लाये गे । आत्र - - - -  
 सोने से सोना - - - - -

दुसरा तरफ :—

गजुन्द

फिर पडुछा है दिने राज लूदा लुर करे ।  
 उन से हो आरे न लखार लूदा लुर करे ॥  
 महरवान होने है वा मुक व लख हां है ।  
 वा में आये है गायार लूदा लुर करे ॥ फिर - - -  
 लूले किमगे दुई खला हुआ आरज देगा  
 बह दुरे लूदाव से पंगार लूदा लुर करे ॥ फिर - - -  
 महरवान हां है - - -

P. 7096.

भैरवी

पी० ७०६६

नदीने में मोर दिया मेंनां वाला है रे ।

भर दे जानकी सरते अहमद—अरे साझी को सर वाला है रे । नदीने --  
अनाना खः बांधने थे शाह सरफराज़

जयरॉल से फरमाया कि ऐ मोनस व दम साज़

इस परदे आ हिज़ से तुन्हे आती है आबाज़

देखो तो उठा कर वहां पांगोदा क्या राज

जयरॉल ने की अज़ कि क़दरत मुझे क्या है

महबूब ने फरमाया कि जा मेरो रज़ा है

अरे नदीने में नार सदां वाला है

दूसरी तरफ़ :

भैरवी

फ़ना कैसी बड़ा कैसी जब उससे आगना ठेरे ।

कनो इस घरमें जा निरुने कनो उन घरमें आ ठेरे

मोहम्मद मुस्तफ़ा आर हज़रते यूसुफ़ से क्या निसबत

वह मतदूब ज़नेरा है वह महबूब खुदा टेर । फ़ना ---

चाहलम आगमान में रह गये हैं हज़रत ईना

मगर अगें मग़हा पर मोहम्मद मुस्तफ़ा टेर । फ़ना

फ़ना फ़िला जब हम होवके तो हम हो हम है

कहाँ दन्दा घने अरने कहीं अरने खुदा टेर । फ़ना

भला किन तरह से गरदिय में आये किनोरे उन्मत

हुतेन अन्न अन्नो दइयत से कोई ना ख़दा टेर । फ़ना

अब बैसे जोकरा बवाजोगो गोरो ।

फागन मस्त महीने की होरी ॥

एसा सब संग लिये फिरत हँ, बाहर निष्कल इरें रो भोरो-अब  
एव भारत मे दुलारी दिन्ती परत है, बाहर निष्कल तो सात्र महोरो-अब  
फागन मस्त महीने की होरी --- अब ---

दूसरी तरफ .—

होली

मेरा मन मोहन मे गयो भाई

मे अरने घर बंदो—अबानइ मृत्नी आर उगाई

मागत वान तन जैसे बारी—जिवा विव गयो है समाई

घाव मही देत दिन्दाई—मेरा मन - - -

तनइ दिन मन हीन भई है एव बुध गई है भुवाई

ग्याम ग्याम रट लाग रही है व्याकुल होव उट पाई—मेरा - - -

मे बारी मइयां ध्यानुव हो उगे पाई

बदां वे कुंवर कइदाई—मेरा मन - - -

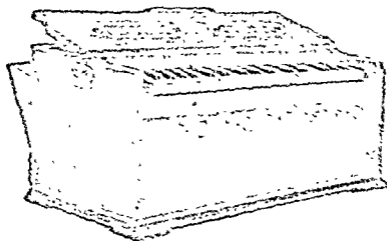
जब कि

आप हाथमोनियम

खरीदें तो

हमारे हाथमोनियम के सुधीयता को न भूलिये. हमारे यहाँ बहुत ही  
बिस्म के हाथमोनियम कारों का कारखाना मिलेगा।

हमारा हाथमोनियम की कारों हम कारखाने कागरी करते हैं क्योंकि ये  
हमारे काम कारवाही में बहुत काम आता है।



यदि हमको अपना हाथमोनियम लाना पड़े

मेहनत का काम हो जायेंगे है

हमारे कारखाने का नाम है

# “हिज मायूम बयैस”

अमली कुला सादी

‘नया’

हिज मायूम न० ३३

प्रामाफोन

इसका नाम है बंदिया  
संख्या ३३ बंदिया  
एक ही है  
एक ही है  
एक ही है

इसका नाम है बंदिया  
संख्या ३३ बंदिया  
एक ही है  
एक ही है  
एक ही है



अमली कुला सादी

गम गम, माया

अमली कुला सादी

अमली कुला सादी

अमली कुला सादी

P. 7208.

भैरवी

पी० ७२०८

बल बह दामनगीर धे राम आज दामनगीर है—राम आज—  
 सुवाप तो अच्छा था लेकिन क्या पुरी तापीर है—क्या पुरी —  
 बल बदन की धार कलियां चुन कं मुजरिम बनगये-चुनके . . .  
 आज राहरी में मेरा हर खार दामन गीर है-खार दामन . . .  
 मर बसर एदु चेंगे एक दिन जलवा गाहे नाज़में-जलवा —  
 उम्के मिलनेके लिये यह थापरी तदगीर है-थापरी . . .  
 दिल मेरा तो चाहता है उम्के मिलनेके लिये—उत्तके . . .  
 हृद अदूसा खोले है हृद राम दामन गीर है-राम . . .

दूसरी तरफ़ :—

बल गंडा

पेटुद ऐमा सिया खोले गाय तनहाई ने ।  
 खरह ने रामप जलदो तेरे गैदाई ने ॥  
 हुस्ने कामन की जो हद रस्सी थी रैनाई ने ।  
 धीर जा हाथ बढ़ाया उमे काम आई ने ॥  
 नयां हुम्न गानोहा अरज दतनाई ।  
 हाथ खोले लोका लोका लोका लोका  
 नामः ३ : . . .  
 बल . . .

P 7209

भैरवी

पी० ७२०९

नादे पड़त मोको धन—न पड़त हूँ दिल रन के सांरलिया ।  
 तुम बिन हमको बलन प.त है । तुम बिन प्यारे बल - - -  
 नीर बहुत दोऊ नन सांरलिया—नादे पड़त - - -  
 तुमबिन प्यारे बलन पड़त है नीर बहुत दो मन के सांरलिया

दूसरी तरफ :-

भैरवी

मनवाले नैनवा जलम कर ।  
 आखे यह कह रही हैं कि दिनन किया स्वराय ।  
 दिल बहरहा है आँसु ने हम को डयो दिया ॥  
 थिगाइ किमीका कुद नहीं इस दे दे इम्कमे ।  
 दोनो की जिदने स्वाकमे हम को मिला दिया ॥  
 तू है मरहूर दिले आजार यह क्या, तुम पर रहता है मुझे प्यार यह क्या  
 जानना हूँ कि मेरी जान है तू—आँरमे जानमे बेजार यह क्या ॥  
 तेरी आखे तो बहुत बखली हैं—गव इन्हे कहते है बीमार यह क्या ।

P 7233

होली फाग

पी० ७२३३

बिन बादर बिजली कहा चमकी । बिन - - -  
 ना बही गजे ना बही बरसे  
 गोरिपाके माथे बिन्द्या चमके—बिन बादर  
 ना बही —

# हिन्दी ग्रामोफोन रिकॉर्ड संगीत

५१

दूसरी तरफ :— होली

जन्मा तट राम बसे होरी—जन्मा तट

दौड़ दौड़ पिचकारी घनावन

अर्थात् गुमान भरे भोजी

जन्मा तट राम बसे होरी

दौड़ दौड़ . . . . .

P 7234

गुज़र

पी० ७२३४

गिनानोंमें जो हृदय फिर न उभरे जिन्दगानी में ।

हज़ारों यह गये इन घेतनों के बन्द पानी में ॥

ना पर दरवाज़े अपनी जिन्दगी घेतन के दीवाने ।

यह काटगा घड़ाने में जो घेता है जगानी में ॥

यह दाम का प्याना नीत का कड़ा प्याला है ।

मिना है झर शयत में दिनी है आग पानी में ॥

गिनानों में जो

दूसरी तरफ :— गुज़र

यु ज़ुलम कर न ज़ालिम लुट्टू व धरम के बदने ।

एक दिन मुझे मिने मे ज़ुलमो मितम के बदने ॥

इस ज़ुलम नारया की आँखिर सज़ा मिलेगी ।

दो ज़ुलम का तार होगा बागे धरम के बदने ।

दौलत न साथ देगी हयमत न पास होगी ।

कौड़ बचन में होंगे दानों दरम के बदने ॥

इस ज़ुलम ना





P 8025

दादरा सायन

पी० ८०२५

पाट की चोखिया मिनापदे देवरा जोगिया  
 क्षतिया क्षताया मन्दरा लागे देवरा जोगिया  
 चोखिया पवन व हन गई पत्रिया  
 खडा गिराया मुनाये देवरा जोगिया  
 हनरा जो हुआ मधुपरा का नोहर मांगिया का वाकरा  
 छली छली रमयाये देवरा जोगिया

दूसरी तरफ :-

दादरा

बरो मोने बतियां नैना मिनाके-नना मिनाके बरो मोने - - -  
 मेरे वहां पाउ ल्याके परने-बाद्योने सारी कहां प्यार रतियां  
 दिन लुभे दे चुके अथ जान रहे पा न रहे-उन्दगो का कोई सामान रहे पान रहे  
 अन्धा वषट् मिना जाओ वही मुन जा हत हुई हैं मोत तोरो बतियां  
 नैना मिनाके बरो मोने बतियां

-----:०:-----

P. 8026

गजल

पी० ८०२६

सर फ़रौयी की तनका अब हमारें दितने है  
 देखना है जोर कितना बाहुए हातिचने है  
 रह बर राई मुहब्बत रह न जाना राहने  
 लज्जते सहता नूर दो दूरने मझिचने है  
 पक, खाने दे बतायेगे मुझे ऐ आत्मनां  
 हन अमी ले क्या बताये क्या हमारें दितने है  
 ऐ एहोरे मुल्क व मिल्लत मै तेरे ऊपर निस्तार  
 अथ तेरी हिम्मत का घवां गिर की महकिल में है



दूसरी तरफ :

सुझना

मूल जानी से दो जाले हो बातिर नाम है  
 सुन उठावो तेन मरजाता हमारा बाम है  
 मै ननों मिचयो तो दीने हैं मू के घुट हम  
 दिवरो माहो है मेरा और दिवरो दिवहा जाम है—दिवरो-भरम जानी --  
 पदमे माग कोर मूहरो फिर गये मिचय मिचय  
 क्या जाले दिव बा कदक था दार बी कुजोर से-मूल जानी ---  
 मे ननों मिचयो ता दीने हैं मू के घुट हम  
 दिव हो माहो है मेरा दिव हो दिव बा जाम है—मूल जानी ---

—:—

1 8 31

दादरा

सं० ८६३१

हाम सेउरिया पर सेना मरजाव गये  
 म कुदरे गये म कुदरे गये  
 बायो उमिरा से नाम मरजाव गये है—मूल सेउरिया -----  
 बममिलो है तो जिने भी है मिचयो उरयो  
 पदमे मरजाव है कि हम मू दिवरे देरते  
 हम से विचार के सेना मरजाव पर गये हो— १ २ ३ ४ -----  
 बायो से बमम मरजाव गये है—मूल सेउरिया -----  
 मूल मरजाव मरजाव मरजाव से मरजाव  
 मरजाव से मरजाव मरजाव मरजाव मरजाव -----  
 मरजाव से मरजाव मरजाव मरजाव मरजाव मरजाव  
 मरजाव से मरजाव मरजाव मरजाव मरजाव मरजाव -----



गज़ल

दूसरी तरफ़ : —

आराम के भे साथी क्या क्या जय बक्त, पड़ा तो कोई नहीं  
 मय दोस्त हैं अपने मतलब के, दुनिया में किसी का कोई नहीं  
 बटे हैं वहाँ आहने मगनद - - - - -  
 या यज़म तरय या कुन्जे लहद या मोम समाशा कोई नहीं  
 है आरज़ वम इतनी ही पता चलता है तेरी घरयादी का  
 ज़िम से न बगूँल हों पदा इस तरह का सहरा कोई नहीं  
 आराम के भे साथी - - - - -

गज़ल

पी० ८६८९

५०४७

जाय ये जान हिज़्र में या पस्ने वार हा  
 अगे होना है जो कुछ आज ही परवर दिगार हो  
 दिल में ही तेरा जानवा ज़यां पर हो तेरा नाम  
 अगे आंखों में तेरा बक्त, अजल इन्तिज़ार हो  
 सीने से मलरहा है इम पाय वार के  
 गायद युं ही से खोलें दिले ये करार हो—जाये यह जान हिज़्र  
 अगे होना है जो कुछ आज ही परवरदिगार हो - - -



## हिन्दी ग्रामोफोन रिकार्ड संगीत

दूसरी तरफ :—

गज़ल

चिराग़ उम गिलने यह कह कर बनावे हें मेरे गिलके  
 क्यामत तक मुझे जलना पड़ेगा खाक में मिल के  
 पम मुद्देन बनावे जाये गे खाकि मेरी गिलके  
 सवे जान बाज के बोले मिले गे खाक में मिलके  
 मयाले बस्त पर इंकार से मूह किम लिये फेरा  
 करो इकरार घरेने जोइ दो टुकड़े मेरे दिलके—क्यामत ---

: : —

P 7840

दादरा

पी० ७८४६

हां रे ऐमो हरजाई रे कन्हैया डगर चलत गगरी मोरी गिराई  
 करके टिटाई ऐमो हरजाई रे ---  
 बाहिद पिया बाहे रार मवाई—मोरी छोइ न कलाई बल खाई  
 लचक खाइ बल खाई तरपाई—ऐमो हरजाई ---  
 ऐमो हरजाई --- ऐमो हरजाई ---

दूसरी तरफ :—

मांड

कोई हसी हो हमें एक नज़ा कर सेना  
 जिगर को छानके मुझे हां कर सेना  
 बार मुनतज़िर करती है नाज़ कर देखो  
 बला निगाह से उन्हे गाहे गाहे कर सेना—मोई ---  
 नोकीली आंखों से चलता हुआ यह जादू है  
 निगाह नीची ही से दिलमें निज़ा कर सेना—मोई ---



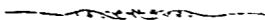






दूसरी तरफ:— राजल सोहानी

फल गया दिन देताह या रय करू तद्वोर क्या ।  
 देवु दिखलाती है मुझको अब मेरी तकदीर क्या  
 हिल नहीं सकता दो जानासे जो तू एक कदम  
 पड़ गई उलफत की ८ दिन पांव में डूबोर क्या । फल - -  
 अबनकर आया न क्यों कामिद मेरे कनका उवाव  
 चाक कर वाली खग होकर मेरी तहरीर क्या । फल - - -  
 मुझको दीवाना बना दिमने पिराया दू बदर ।  
 रहन मेरे हाजर खोपेगा वह बेसीर क्या । फल - - -  
 तूह दिल पर नरक विमने नख्खारे दिखदार है  
 ऐ दिने नादान हने फिर हाजिने तमबोर क्या । फल - - -



P. 210s.

भाण्ड

पृ० २१०८

फलवका बांका सांवरिया खड़ा राहने बंसी बजावन है ।  
 जिन उकने चौर हूक उठे उर बसी बूक सुनावत है ॥  
 लज धान मेरी अब पेरी मखी कल रातको मेरी जो आंख लगी ।  
 क्या देखत है जिना मरने में नोहे दगल बनता दिखवत है ॥  
 एक कारी कन्यालिवा करी धरी नरवात्र का लनां नदनन में ।  
 बलाय को बूक दूज पर थी वह शम्भुका मुखड़ा दिखवत है ॥  
 बर उ को जिनदन आव लगे धा नरका तूका पेरी मखी ।  
 फल व्याकुल है अब मेरा बलुन दन नर कन धररावन है ॥



दूसरी तरफ़ :— धानी

गारी दूंगी हंला मोरी काँहको करेँपा सुरकाई रे—सुरजाई ---  
 काह कऽ मोहन तोरो माँवरो मृत मन भाई रे । मन भाई -- गारी --  
 साख जनन कीनो एरु न मानो गाहर प्यारी से यह जन कीनो  
 हां हां प्यारी प्यारी रजधाये तट घोली मगकाई रे -- घोली -- गारीः --

P 3551

सँहकाफी

पी० ३५५१.

हम जाने मुहब्बत जान दिया करते हैं, दिन रात तुम्हारा नाम लिया करते हैं  
 अब आते होंगे आये मे आते हैं, हम इसी ध्यानमें जान दिया करते हैं ।  
 क्या जानो नादान हा इन बातोंरा, हम आँख मिलाकर जान लिया करते हैं  
 तुम लाए यहाँना करो यहाँ जानेरा, एक नज़ा में हम पहचान लिया करते हैं  
 तमबीर मानने रख कर तुम्हारी प्यारे, सुगत पे तमदरु जान किया करते हैं ।  
 हम सृष्ट करते हैं नाम मेरा है गोहर, राजाँमें मदा इनाम लिया करते हैं ॥

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी भन्धोरी

पृथ्वी में अब तो हो गये सानान नये नये ।

बँठे हुये हैं दर पे निगाह यान नये नये ॥

जब तक कि तेरी जलक में दिल है फँसा हुआ, देखा करेगे खुवाय पेरे सान नये २  
 उम की तनाय में जने द्यते अनु को हम, महरा नये गये हैं यथायां नये नये ।  
 जिन पर करम खुदा का हो परवाह है क्या, होतें रहेगे जानरे खुवाहां नये २  
 हर शब्दाहर द्यार में उस का करन रहा, पेदा हुए बहुत से महरयान नये २  
 लाखों हो जान देते हैं हम पर दुमार क्या, उमरर भी लोग होते हैं बेजान नये  
 गोहर खदा के फल की उम्माँद मय नुदान कर देगा दैटे दैटे वह सानान नये २



बन्दों की क्या मजाल रि पे हुम्न ख चलें  
 नयनों प भी तो हुम्न खुदा के हिस्साप का—आगिर— . . . . .  
 माया इसी लिये न बनो को अता हुआ  
 क्या इनक था खुदा को रिमालत नप्राय का—आगिर— . . . . .  
 गोहर जब आता है मेरे नाम रमून पाक  
 भर इंद में एक शिया है सराने जराथका—आगिर— . . . . .

दूसरी तरफ : --

मापड़

गफोरे राज महगर गफोरे राज जज्ञा तुम हो ।  
 जराश क्या वः इन से कि महपये खुदा तुम हो ॥  
 खुदा यातिन है तुम जाहिर हो यह अरुदा ट लानेहल ।  
 खुदा तो बह नहीं मकता मगर गाने खुदा तुम हो ॥  
 खुदा को तुम से है उदफत तुम्हें महपय है अन्मत ॥  
 खुदा तुम पर फिदा है अरनो अन्मत पर फिदा तुम हो ॥  
 लिता सिल अला क्या खूब मुकत तुम ने पे महरो ।  
 क्या गफोरे मुनजाजद गहोरे करपला तुम हो ॥



P 5001

होला फाग

पी० ५००१

देरे खवाजा यारो देरे मुस्तफा है, सरासर मदीने का नख्या खिं चा है ।  
 मदीना मेरा मेरा काया यही है, हमें दरप खुबजा के जाना खा है ।  
 खुदा को इमन नाम खवाजा खुदा है, न समझे गे ज़ाहिद तू इनकी फता है । देर  
 वहां मेम है यह मुहन्बत का देगो, खुदा आप खुद जिन का गंदा हुआ है ।  
 फता किम का कद । फता हो गो ता जान, खुदाको बछा सब फनाहो फना है ।  
 जो बोने : मनमूर हाजो अताउलहक वहां रात दिन देगो अपनी सदा है ।





सुदाया शाह एडवर्ड को तू रत ज़िन्दा बरामत तह ।  
 रहे शायम हनुमन धीरे होये फज़ले रूबानी ॥  
 दुश्मा पर मर भुहा पर खतम करता है क्याय अरना ।  
 रहे सब मारवान उन पर हो सब पर फज़ल सुयहानी ॥

दूसरी तरफ़ : - स्वर्गीय मिस ज़ोहरा वार्ड गुज़ल पर्ज़  
 नाचे करते हैं ज़मान के नक़्शों किया करते हैं ।  
 तुम मलामत रहो हम तो यह दुश्मा करते हैं ॥  
 हथरका जिक्र मगर जगा गुन तीन दान ।  
 ऐसे हगाम यहाँ रोज़ तुम्हा करते हैं ॥ नाचे - - -  
 तुम मुझे हाथ उठाकर हम अडा से कोमो ।  
 देखने वाले यह समझ 'क दुश्मा करते हैं ॥ नाचे - - -  
 फिर मेरे दिलर मतान रा दुई है तदपोर ।  
 फिर नय मर से यह समावा बफ़ा करते हैं ॥ नाचे -

१०

## मिस गाहिर जान

जान

पार २६८८

सुधाया शाह एडवर्ड को तू रत ज़िन्दा बरामत तह ।  
 रहे शायम हनुमन धीरे होये फज़ले रूबानी ॥  
 दुश्मा पर मर भुहा पर खतम करता है क्याय अरना ।  
 रहे सब मारवान उन पर हो सब पर फज़ल सुयहानी ॥  
 दूसरी तरफ़ : - स्वर्गीय मिस ज़ोहरा वार्ड गुज़ल पर्ज़  
 नाचे करते हैं ज़मान के नक़्शों किया करते हैं ।  
 तुम मलामत रहो हम तो यह दुश्मा करते हैं ॥  
 हथरका जिक्र मगर जगा गुन तीन दान ।  
 ऐसे हगाम यहाँ रोज़ तुम्हा करते हैं ॥ नाचे - - -  
 तुम मुझे हाथ उठाकर हम अडा से कोमो ।  
 देखने वाले यह समझ 'क दुश्मा करते हैं ॥ नाचे - - -  
 फिर मेरे दिलर मतान रा दुई है तदपोर ।  
 फिर नय मर से यह समावा बफ़ा करते हैं ॥ नाचे -



P. 7850.

गज़ल

पी० ७८५०

दमे फ़िररे सज़न आया जो ध्यान फ़ितना इयामत का ।  
 तयियत मेरी निरला हदीस फ़िररा इयामत का ॥  
 मेरे दिलकी तनज़ा देखिये क्या हयार हो तेरा—हां रे ।  
 कि इनकी शोखियों ने भेष बदला है इयामत का ॥  
 न यहाँ ज़स्मत हकूमत की न यहाँ बुद्ध ध्यान दौलत का ।  
 मरीज़ इज़्क है हम दर्द रखने हैं मुहब्बत का ॥  
 नमल कर एज़ियों से दिल मेरा पेदाद यूं थोने ।  
 हमी कम्बलत दिलमे दर्द रहता है इयामत का ॥

दूसरी तरफ़ : मिस ग़फ़ूरन जान - ग़ज़ल

आज प्यारा गनेसे लगायेगा मेरे दिल की लगी को बुझायेगा  
 आज निकलेगा दिलका गुबार, आज सोनेसे सोना मिलायेगा—आज --  
 सोनेसे सोना मिलाके गजे लगाके चूमगा गौरे एज़मार  
 आज पहलुनें अपने लिटायेगा मेरे दिलकी लगी को बुझायेगा—आज --

—: • :-

## मिस ग़फ़ूरन जान

P. 7889

ग़ज़ल

पी० ७८६६

न जाना हज़रते ज़ाहिद कभी तक इबादत पर हां हां हां  
 हमारा बच्चा देना मुनहासिर है उसको रहमत पर  
 अगर में चाहता है वस्लका वायदा कभी उनमे हां हां हां





आत ना मागुरु दुनिया में कही है मे क्या  
कौन है गेया हर्मी निगधी खबर होनी नहीं

दूमरो नाग:

गुजल

वदो नगदा रहा कुछ दिन अगर कामे गिलभगर का  
निगादे धर्म भी देने लगेगी काम सुन्तर का  
कभी सुभगे भी विवयन में हुआ कालो थीं कुछ बाले  
कभी सुभपर भी सुभगे या निगार एक बन्दू परवर का  
जग मे है कभी इवत वगत पर है कभी हगगत  
दिवाछर हाव शिव हमने बनाया उनको पथर का

- \*

17 8052

गुजल

पौ० ८१३२

गात्र इवकल विष्ट मे जो केदकर पगमामी हुई  
काल काले मूद मे निवधी और बेगानी हुई  
मेरे दीवान न वार रगा कगत वेदा किया ।  
विष्ट वरी मे मिलगाई घोष वेद दीवानो हुई । विष्ट वरी - - - -  
बदगाई व विष्ट गात्र मे कहने लगे  
बदगा का क्या विष्ट विष्ट तुम मे जादानी हुई । बेदगा - - -  
गात्र इवकल

दूमरो नाग

गुजल

गात्र इवकल विष्ट मे जो केदकर पगमामी हुई  
काल काले मूद मे निवधी और बेगानी हुई  
मेरे दीवान न वार रगा कगत वेदा किया ।  
विष्ट वरी मे मिलगाई घोष वेद दीवानो हुई । विष्ट वरी - - - -  
बदगाई व विष्ट गात्र मे कहने लगे  
बदगा का क्या विष्ट विष्ट तुम मे जादानी हुई । बेदगा - - -  
गात्र इवकल









## मिस हिंगन वाई

P 108

मजन

पी० १०८

हे गोविन्द राखो शरण् अब जीवन हारे  
 गौर पीउन हेन गये सिध के मिनारे  
 मिध बीच बसल गृह् घरण धर दशाई—हे गोविन्द ---  
 धार वहर जुद्ध भये गज हू अब हारे  
 नाक कान हूवन लागे कृष्ण को पुकारे—हे गोविन्द ---

दूसरी तरफ़ :

मजन

नाम को अधार नेरे नाम को अधार रे  
 खेलन खेल जाय गिरे जमना बिच धारा  
 सेन कर कूद पगो नन्द को दुलारा—नाम को

## मिस हीरा वाई

P 1209

दुर्गा

पी० १२०९

गण्डी मागी हम्म भूम—गण्डी मागी हम्म भूम

दूसरी तरफ़

कामाय

मागी मागी जना जना मागी मागी तजर भर कर

नागी न मागी नयना नयना



1. 1. 10

शिवजी का प्रथम

जन्म विष्णु की

कविता का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

—

1. 1. 11

शिवजी का प्रथम

जन्म विष्णु की

कविता का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

जन्म का प्रथम

जन्म का प्रथम अंश है शिवजी का प्रथम

P 0212

शंकर

पी० ६२१२

म शून्य लगी पीढ़ियाँ  
 न्य गय तोरा प्यारा मोहम्मद  
 पीढ़ियाँ - - - - -

दूसरा नरक :

गज़ल

विम ऊपर है गम नाता उम गुने नाशाद का  
 आग कूलों की लगी धर जब के वां सैबाद का  
 में ने समझा था खिलाना कुल बुने नाशाद का  
 क्या रगावो म गही इकतिल के वां जल्लाद का-किय ---  
 गर क्या जाने भवा मर् के अ दाज़ को  
 दूक बाजों ने निय कल खाल बार जल्लाद को

---

P 0213

मुल्तानाती

पी० ६२१३

छंसी कहाँ पीत मगाई रे बान्धमा  
 हर दिन है मक़्का तेरा नैमा मगा  
 छंसी कहाँ - - - - -

दूसरी नरक :

दूषी

मिन चाई अरने रिवा  
 मज्ज चाये दुगेन सुने में रिवा—मिन चाई - -  
 चादल चादल हतिया—मिन चाई - - -











P. 1086

मजमूदा

पी० १०८६

मजा लोने रगिया गरं भूतानी वा  
 हाय रगिना परदेगया में हाय,  
 अब बोन टारं गरं बीच हाथियां

दूसरी तरफ़ :—

बाजरी

मती बाटियो जग में जवान सांवर गोरिया  
 हम गुडा थाने घने हम गु टा पीहिया  
 बीच में घने लीयुतान सांवर गोरिया



P 1090

गज़ल भैरवी

पी० १०९०

गैर भी मेरी तरह करते हैं आहें क्यों कर  
 हम भी देखें तो पसंदी हैं निगाहे क्यों कर  
 न दिनामा न समझी न तगपशी न यषा  
 दोस्ती उम युते बदल से निभाते क्यों कर  
 जंगे दीवार जरा आन के तुम देख तोलो  
 ना तरां करने हैं दिल घाम कर आहें क्यों कर  
 दाग यह चाहते हैं गैर को चाहें भी  
 जो दुरा चाहें हमारा उसे चाहें क्यों कर=

दूसरी तरफ़ :—

दादरा भैरवी

गुलनारों में राधा व्यारी यमें रे  
 जाही जुही में कन्हैयां यते ॥ गुलनारों= . . . . .











P. 1202.

चैत

पौ० १

जुई का कुसुमा हथमा मगत कुन्तलाय गली राना  
मिर पर सुइ सपु इलपा भर सुइलपु आय गई लो मानी  
खरलया हो राना—

दूसरी तरफ़ : —

कजरी

मयां होय गने तिलगमा मौर उमरिया थारी न  
कानो कुरतिया दाच तजरिया, सात पगइया मां  
मयां होय गने तिलगमा ये . . . . .

— ० —

P 1205

होली

पौ० १

मो पै हार दिपो सारे रग की गगर  
मै तो धोके ते देखन लागो इधर  
मो पै हार दिपो सारे रग की गगर  
रग दिइके के जाने कहां हो  
जामो नहीं जमो टइरो मगर—मो पै हार = . . . . .

दूसरी तरफ़ : —

होली

पेरी तोते न खलुगो मै होरी  
तु तो पर वन अरौर मजोरी  
पूक तां वुंदर रग थोरी, दूजे अ गिया के बन्द तोड़ी  
तीजे आई हू मान की थोरो-ताते ना = -  
तु तो पर वन अरौर मजोरी—ताते ना = . . . . .

— ० —



























P. 6053.

दादरा

पी० ईई५३

चलचल ननदिवा दरोट लाग छार्इ मुके क्या मानून था  
 हल घरवा का लड़का ननदिवा का दार मुके क्या मानून था  
 छरे साथ यह लड़कू खिलारे आधी रात मुके क्या मानून था—चल=  
 बमारि का लड़का ननदिवा का दार मुके क्या मानून था  
 छरे साथ यह हट्टा घुमावे आधी रात मुके क्या मानून था  
 बाह बाह गुरीदि जान चल चल ननदिवा = - - - -  
 बज्जिया का लड़का ननदिवा का दार मुके क्या मानून था  
 साथे यह सूहा उड़ा वे आधी रात मुके क्या मानून था-चल = -  
 मालनरा का लड़का ननदिवा का दार मुके क्या मानून था  
 छरे साथ यह गवरा पहनावे आधी रात मुके क्या मानून था  
 घन घन - - - - -

दूसरी तरफ :

दादरा

जानो जानो छय न सोनू गो तुमने गुरपां रात न निजाओ  
 ऐसो पावे न बनाओ न उजाओ न मजाओ  
 पर धर करि जिवा . . . . .  
 सोली मेरे चला मेरे मने सोंद ना सिनेला कानार  
 बसोमी मुने निजाव दामा क्या दुन्दुल मुने न मुने जनाव  
 हा दुन्दुल क्या जगव  
 लड़काने मे लड़का . . . . .







# बहुिया वाद्यजंत्र

( वाजे )

इन्द्रा मंत्रा शिषे ह्य उचिर

मन्त्र पर ।

वाद्य अर्चना

प्राजा पद

इन्द्रा कीर्तने

--

वाद्य मन्त्रो और

प्रवक्ष्य मन्त्रे

-

वाद्यजंत्र का पूजा

मन्त्रो पद मन्त्रा

पदमः पदमः मन्त्रा

.....

.....

.....

.....



गरबा लगालो दिलबर जाना हां हां रे-जाये जौयन वा धीता तेरा

शोहा

जलजाये हुस्ने जलान साथ दिखाने जाओ ।

चाहने वानों को दीयाना दवाने जाओ ॥

दाद. में कोई मिनता है तो मिन जाने दो ।

अपनी रफ्तार में मुम हग उटाने जाओ ॥

मरघ्वत दिया प तन मन वारु हां हां हां

मान जाये मौर कहनया-मुम पिन निम दिन वल नहीं आये

गरबा लगालो दिलबर जानियां - - वाह वाह बहुत अरुद्ध

जाय जुदनया धीता नोग-गरबा लगालो दिगबर जानिया

दूसरी तरफ :—

दादरा

बलन पड़न घ.ने पन दिन मुम दिन सयां

अत करन मानन नाही शीट लगार निडर -बिनती मान

तन मन धन मुम दर शर—इत न प त

उते मर से लगालो जम पाना पलन का

का मर उर उर का मर उर उर उर उर उर उर

पलन का मर उर उर का मर उर उर उर उर उर

पलन का मर उर उर का मर उर उर उर उर उर

पलन का मर उर उर का मर उर उर उर उर उर

पलन का मर उर उर का मर उर उर उर उर उर





P. 8633.

सुझल

पी० ८६३३

क्या खर भी तुम ९ दिन जाना पता हो जायेगा  
 रन्दी इन का उठ भर को तानना हो जायेगा  
 जान की कल कल ने माता मूढ की कुद हद भी है  
 रोज कहेंगे हो कल वादा क्या हो जायेगा । क्या खर - - - -  
 तुम जो उठ जावोगे पहलू से तो क्या हो जायेगा । हां रे  
 बन रही ना दूरे दिन कम होमिता हो जायेगा  
 नाम तो बिन्दिस का कहना तुम न तो जाने का नाम  
 खि रही बेताबियों का मानना हो जायेगा

दूसरी तरफ

शदरा

तुम्हारी छांवें हैं निम्ने जादू नज़र से कर दो खर के दो दो  
 निहाह लड़ावो जो तुम किन्तो से तो होवे दूकः कित के दो दो  
 खर खदायेई खारिड़े की दिलो जिन्दगी को क्या है धामत  
 रों में मन्नु बोह ता खिमानत तुम्हारी निरखी नज़र के दो दो  
 जनासे खर देखने को खरने रखा है दो खारियों को खाने  
 देखीं देने हैं साक खर तुम्हारी सके खर के दो दो  
 हू बाम बानो का उनका बोह बोह रोज देने हैं तुम्हारे गिलकर  
 जो वर जानो के खार लूके लयो के धारो खर के दो दो



P. No. 9.

दादरा

पी० ८८६६

होरे आंगन पदम न मुके

सबके आंगन लिनिया बिरे वा हमरे आंगर कोरे धुर—बदरा न मुके --

सबके रिवा निर पर ही रहत है हमारे रिवा परदेन—बदरा न मुके ---

हमारे माथ की दुई दुई खेतावे हमारे करन कोरे—बूट बदरा न मुके --

दूसरी तरफ :-

दादरा

क्या नडे की गुजरिया कमर तोरी छला मुंदरिया - - -

आखे तो तोरी बनवा की खंके—भवे बड़ी है कमल

कमर तोरी छला मुंदरिया - - - क्या नडे की गुजरिया - - -

आगे आगे राम बलत है—पौडे कुवर कंधिया

कमर तोरी छला मुंदरिया

आखे तो तोरी बनवा की खंके—भवे बड़ी है कमल

कमर तोरी छला मुंदरिया—क्या नडे की - - -

~\*~\*~

## मिस लतीफन जान

दादरा

पी० ८१५५

मह नडे की गुजरिया कमर तोरी छला मुंदरिया

आखे तो तोरी बनवा की खंके—भवे बड़ी है कमल

कमर तोरी छला मुंदरिया - - - क्या नडे की गुजरिया - - -

आगे आगे राम बलत है—पौडे कुवर कंधिया

कमर तोरी छला मुंदरिया

आखे तो तोरी बनवा की खंके—भवे बड़ी है कमल

कमर तोरी छला मुंदरिया—क्या नडे की - - -



मो हुन हुन और गुनाह रे  
खसत मन्द हुनार श्रुव के लोगन में

दूसरी तरफ :- दादरा

मररो रो मे का तिया पियु बहु न एहाय ।  
तुम सो मोतिन पर आवन जानत मोता जिन परराय रे  
न गही दिन के लगाने को हयन देख तिया  
पाद कर के तुम्हे दो परा बगम देख तिया  
तुम को हुन एत नुहयन को मजत गरौ पर  
तुम को दिन देखे अर्नाताने बगम देख तिया  
मररो रो मे का तिया पियु . . . . .

— १-०-१ —

P. 217

शैखी दुमरी

पा० २१९

बादुन मोता नेहर ह्य जाल-बजी नेहर ह्य जाल  
जय होनिदा दरबदरा पर चारु रे

बदला बेताना ह्ये जाल

बादुन के राज जाल इहा जाल बगम

बादुन बादुन पर बादुन के राज बदलक ह्य

बादुन जाल २१. ९ जाल









फड़क कर सुगें विमलिल की तरह आगिक जो मरते हैं  
 यह पाकर के अदू देते पुनको तय ये आश करते हैं  
 निरुल जाते हैं यह जिम राह को गज़र करते हैं  
 हज़ारों धरधरियां देते हैं विमलिल में गुज़रते हैं  
 मैं मरता हूँ सुन्हीं पर संकिन क्या मेरा जो करने हो  
 कि हाय हाय सं लिया अच्छा मिया हम याद कहते हैं  
 फड़क कर सुगें विमलिल की तरह आगिक जो मरते हैं

दूसरी तरफ़ : — गज़ल कच्वाली

दिल गेहूँओं में हमने फंसाया न जायेगा  
 हम चांद को यह दाग लगाया न जायेगा  
 बहता है दिल हिसाबू में लुब्ध निगाहें तेरी  
 आंखें यह कहती हैं कि हिसाया न जायेगा  
 तेरा हिसाना आंखें साजे हैं बार मे वह  
 जोदन बहार पर है हिसाया ना जायेगा  
 साग्यों को धाक में तो मिनाने का आरवा मुने  
 जालिम में कान दबको मिसाया न जायेगा  
 दिल गेहूँओं में हमने फंसाया न जायेगा











दूसरी तरफ : -

दादरा

मोरे जोयना पे आई बहार बालन परदेसा न जाइयो

मोरे जोयना - - - -

आओ पिया में सैज दिहाऊं गरवा लागूं करूं तोओ प्यार

पलन परदेस न जाइयो मोरे जोयन - - - -

## मिस मुमताज़ जान

P 127

फ़ावली गज़ल

पी० १२७

यह तो मैं क्यों कर कहूँ तेरे खरीदारों में हूँ

तू सरापा नाज़ है मैं नाज़ खरदारों में हूँ

सोफ़ियों में हूँ न रिन्दों में न मय ख़ुबारों में हूँ

ऐ सुतो बन्दा खुदा का मैं गुनहगारों में हूँ

मैं अज़ल से हुस्न जाना के खरीदारों में हूँ

उसका मज़हब हूँ उसीके नाज़ खरदारों में हूँ

याहरी ग़ज़लत नहीं है आज तक इतनी ख़बर

कौन है मतलब मैं किम्के तलमगारों में हूँ

वह दरीदा होके बांधे एक पुरानी तज़ से

मैं किसी ज़ल्फ़ दुताके नाज़ खरदारों में हूँ

इज़ का जादू क्यामत है जो जित पर चल गया

वह मेरे दिलदार है न उसके पारों में हूँ

कर सं है जलम और उस पर यह तराहें देखिये

पूजने हैं मुमते क्या मैं ना तलमगारों में हूँ





मनीहा भी था बिलकूल दुख पारा मुहम्मद का ॥  
 अलम है नूर उन अलतान दीन की कोन शाहीका ।  
 मदा बजना है पाँचों बन्द, मदारा मुहम्मद का ॥  
 पदु च लेगा अघान में जब कि एक एक उन्नति उनका ।  
 बहो उन बन्द, होगा एम से तुदकारा मुहम्मद का ॥

## मित्त मुश्तरी जान

P. 7374

गुलिस्तां

पो० ७३५४

बहरे गुलदान गुलिस्तां की फ़िजा बन जाऊँ  
 नामें संगीन मन्ज़र कुन कुन की सदा बन जाऊँ  
 दोस्ता सेने के लिये जानें शय्य बन जाऊँ  
 कहिये तो सुझना मनयोर बड़ा बन जाऊँ  
 आलो सादल को मेरी जान मडर से जानो  
 मक़्त उलफ़्त है मुझे आरे बख़्त से पालो  
 मुने सुदरंग है अब्दी तरह देखो भालो  
 हार बन जाऊँ मने से जो अगर मन डालो ॥  
 पाँच में तुम जो लगातो तो हिना बन जाऊँ ।  
 बहरे गुलदान गुलिस्तां की फ़िजा बन जाऊँ

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल

दुत दुत नाजुराद पर कोरे अलम गिरा दिया ।  
 हां हां कोरे अलम गिरा दिया  
 दानने गुलामे बर ज़दा बहने मित्तन बना दिया ।



कहाँ आराम से बैठे फलक रहने नहीं देता  
हमेशाह एकन एक मर पर मुनोपत आही जाती है ।

—::—

P. 7400

गज़ल

पी० ७३६६

क्या जिये खाऊ जिये जीने का सहारा न रहा  
जो कुछ पहिले था वह ध्यान हनारा न रहा  
एक मै हू कि तुम्हें दिन से भुजापात कभी  
एक मुनहो कि तुम्हें ध्यान हनारा न रहा । - - - -  
आज तक सभ किया मैंने तेरे बापदे पर  
अब मेरी जान तुम्हें सभ का पारा न रहा । क्या जिये - -

दूसरी तरफ़ : -

गज़ल

झिस्नाए इग़्द मेरा दिल से उला करने हैं  
कितने भोले हैं मेरे हक़मे हुआ करने हैं  
गालियां भी हैं मउ को जो लदे धारों की  
और हम झिस्नाए भी दे जात उला करने हैं—झिस्नाः - - -  
आए हके व लगे हउ आन फया रे ये बन  
उमर का काम में यह काज उला करने हैं  
शक़्मिया इक मेरा उला करने हैं

— - - - -

















हम फिर से आदमी हैं मगर बदल भावों से  
 हम हारम से बिन जाऊं है—भेदों लगी आदमी है—बेहोरी --  
 मोरों दिन दिन बदल गये --  
 भेदों लगी आदमी है—बेहोरी जादों है --

दूररी तरफ :

पीढ़

हो राम ब बरी सुन्दरी—हो रहे बचन हमारे  
 हो राम ब बरी सुन्दरी  
 ह म बर का आदमी लगी लगी  
 आदमी लगी है लगी—हो रहे लगी लगी  
 हो राम ब बरी सुन्दरी—हो रहे लगी—हो राम ---  
 हो राम ब बरी --- हो ब बर

—१०—

मकर

१०६ ६६२

मकरों आदमी ब बर ब बर सुन्दरी लगी

हो ब बर लगी लगी लगी लगी लगी लगी

मकर

हो लगी लगी लगी लगी लगी लगी लगी

लगी लगी लगी लगी लगी लगी लगी लगी

हो लगी लगी लगी लगी लगी लगी लगी

लगी लगी लगी लगी लगी लगी लगी



## मित्त राधा वाई

P. 7661.

भजन

पी० ७६६१

एना है तारे हैं मुमने साखों - - -

हर एक भगत को दुखमें पा कर—स्वयम् मिभाला है मुमने जाकर

पिगड़ रही है दया हमारो—इन्हें मिभालो तो हम भो जाने

एना है तारे हैं मुमने साखों

दूसरो तरफ़ : -

भजन

समाय गयो मोरे हिरदे में मोहन—समाय गयो री मोरे . . . .

समाय गयो मोरे हिरदे में मोहन—समाय गयो री मोरे हिरदेमें मो०

मोर-कुट्ट कुयरेवागृत कुटल—अरे कुटल की भमरु दिखाय गयोरी

मेरे हिरदे में मोहन समाय गयोरी

सांबली सूरत मोहनी मृत पजती माल पड़ी—अरे हिरदे में मोहन - -

P. 8028

खेमटा

पी० ८०२८

करबटवा में घुरियां मुक जइयो रे

साम ननद मोरो पनिषां को भेज पतनी कमरिया लवर जइयो रे

करबटवा में घुरियां मुक जइयो रे

साम ननद मोरो मजरा ए भेजे पारि उमरिया दिगड़ जइयो रे

करबटवा में घुरियां मुक जइयो रे

दूसरो तरफ़ . -

खेमटा

गारो रान क्या न जाइ नारा जिजा घरराय . . .



हुन्ती होयै मी उतर

पड़े को राम कहें हैं तब है नाम छोटे का । सज्जन है नाम छोटे का

दूसरी तरफ़ :

भैरवो

बांहे जोड़ी बनो मन भावनिनां—मन भावनिनां दिन दृष्टारनिनां

इधर तो किरीट और सुरजन की लड़ बनोयो है

उधर सन्दरभना दिन दोरने में होयो है

इधर रोती भाव उधर खोते बेनर की है

इधर नादानयो उधर लड़क बेनर की है

तने नातिन पी हुनये दृष्टारनिनां । बांहे जोड़ी बनो

— • —

P. 8871

दादा

पौ० ८८९१

हुन बनिये बनोये राम बनो है ---

बनो बनो है भौरो है बन बुनाने मन के होयो

होयो होयो हुनयो है

बनोये बनोये बनो है बनो है । बन बनो

दूसरी तरफ़

दादा

बनो बनो है बनो बनो—बनो बनो है बनो बनो

बनो बनो है बनो बनो बनो बनो है बनो

बनो बनो है बनो बनो बनो बनो है बनो

बनो बनो है बनो बनो बनो बनो है बनो बनो है बनो





धरे में तो दूह को सोजत घर गईं रे  
राम मेरा ते नि दिया बिधर गईं रे

—(१००)—

P 7408

दुमरो

पों ७५३८

निम दिन मोरे तड़त तड़त जात मखो रो - - - -  
 मन की बिधां साव कहुं जिना की बिधां साव कहुं जिगता  
 दुखी रो - - -  
 कहां दड़ जाऊ रो मखोती—निम दिन मोरे तड़त तड़त जात - -  
 जात मखो रो हायो मयो रो—निम दिन - - - - -  
 मखो - - - - कहां - - - -

दुत्तरो तरफ, :

देश

जिना को मध मा मतो कहियो जाव  
 काला रे जावे जावे जिना को मधमा मारी कहियो -  
 पाद जावन मोरे उनको बनिना कत न पड़त जिना जाव  
 मन को मधमा मतो बाहुयो जाव काला रे - -

मखे =

पों ७५३२

मया इस काल का मया हुआ है

काला काला मया हुआ है

मया मया मया मया मया मया



































# मरदों के गाने



## श्रवदुल्ला

P 5242

श्रीशैला ज्ञान कालम

सं० ५२४२

ते मरद पात सुनदरुत ए शीरी सुनवार  
 मरदुवा मरदिर दहनी मरदवा मेहर निवार  
 मरदवा मेहर निवार मरद कनवार काम बी देनी  
 बिधर गाँ का मरद परीर सिवारि का म व दहनी  
 छुव को कभी देनी थी को एके का मरद मरदो  
 जग शिवरा हे काम को मरद का जग एकाव को  
 जग मे देनी जगको—के हम हम का मरद हे जग को का मी मे मरद  
 मरदजग सुन मीका मेरे को के काम का  
 मरद कोनी मी मरद का मेरी कानी मे का जग ।

दूररी मरद : श्रीशैला ज्ञान कालम

मरदु की मरद निवार जग मरद का मी को  
 का का एके मरद को को मरद व निवारि को को  
 मरद व निवारि का मरद का मरदव के का मरदो  
 मरदु की काम मीव को को को मरदो  
 मरद का मरद निवार मरद का मरदो  
 मरद का मरद का मरद को मरद का मरदो  
 मरद का मरद को मरद का मरदो मरदो  
 मरद का मरद को मरद का मरदो मरदो







दूसरे तरफ :- चौथोला द्वायाम गूजर

धरे भतीये साइये र्हों तेरो परमान  
 ये उमर खंडर नहों देता अमो तू ह नादान  
 ये उमर साल नादान देलो अरने जाके  
 जइ करने को जाये तो वहां पर होंगे भारो साके  
 जिन दन लखना पर तेग फिर कियर न जाये धाके  
 नेकी बदी हो सइ ने तेरो मात मंगी घबरा के  
 न तुनते सनर सदेगा देख सलवार भजेगा  
 बस जने कोई ऐसा पोला के तुन्दे क्या पयां सात  
 जय तक बाझो यह है

----- :- -----

P. 5842

चौथोला अमर सिंह

पौ० ५८५२

जाने दे जाना मुझे मत करो रजो मलाल  
 धरे तेरे इकठ का नया मुझे हो रहा सवार  
 बहुत सवार मुझे मना मत कर जाने को  
 क्या लिखा खड़ा नजर कर शाही पयाने को  
 बहा मन पगाने दे मेरे रजपनी जाने को  
 हम गरम मे मट दम जडा करने दे उमाने को  
 न हूँ ... ..

दूसरी तरफ

चौथोला अमर सिंह

एक दिन ... ..  
 मात ... ..









या अथ से प्रयत्न विवर्तो दृष्ट पशु धी  
मेरो जो जान मिलावो अरे जानर पालने जाबा  
होने अहमनि तुम्हारा हनदन तरे दनको हनदन नहीं होजावे किनार

दूसरी तरफ :— चौबोला

महरबान मन्दोस्त मन मुग़िफ़्त मन गन द्वार  
पता लगा कर खुदाय का सापा जान निमार  
सापा जान निमार लगाकर पता तरे हनदन का  
माहेरु माहेजरो माहेलजा मुकरन का  
नारा यका मखर का है नारा गनों रंजो अलम का है  
आपके मानने जाना बेदार खदा म मुकरन का  
पारों दिलगाद करो तुन हृदा को याद करो तुन  
रख गन हृदा जिगर को सापा पता लगा कर दुकड़े दोनो दिलका  
अगर यह जान जावंगी तो मैं इन गनने हटूंगा  
हनारा बस चपेगा तो नज़ा उलफ़त का हटूंगा

—::—

## माष्टर अमोर अली

P 5204

गज़ल पौदू

पौ० ५२६४

तरहो और हो दुनियां में या ख हुस्न वालों की  
नज़ येनेके बदले है दुआ है मरने वालोंकी  
कह कि फल म कहे शोना शर बन जाना  
जवाब म शदन मरे अलफ़त के गायो को—तरहो  
जे म मरने म शर मे दनाया मन शोमा को  
दिलका म म शर मर मानक हालो को—तरहो







































ये माग़ना तंग होके दिलने किया नाला  
 बिम्बो को क्या घायल बरोगी मोरी जां  
 देखा जो रहे पार पर ह गामा है बरसा  
 जां शज़ों पर जनघट है दिल अफ़ग़ारों का भेला  
 बिममिल है बोई देताय तइस्ता है सिमझता  
 और बोई जिगर धामे भरता है यह नाला  
 बिम्बो को क्या घायल बरोगी मोरी जां

दूसरी तरफ़ :—

दादरा

चाहे मेयां मार टालो पारो करे मे-पारो करे मे महेदारी करे मे  
 मुलते आरज़ू धी बोई दिल रहा भिने  
 एक आर भी भिने तो ग़ज़ आटना भिने  
 हम मे शिखरत दिल मे भिने तब नजा भिने  
 दुनियां के देखनेको भिने तब तो क्या भिने-चाहे - - -  
 ऐ ज़ुल्ल देर हज़की उम बो खर महो  
 दिल मे हज़ार दर्द उठे आंकार न हो  
 एक क़ुर है गुनाह या आज उतके हाथ मे  
 पड़वा है दिल मे बिन्नी या जिगर ग़दो-दां जो - -

— ( : : ) —

P 8 2

सेवेडा

पी० टी० ६२

म. न. है कालिदास 'दिल नाला' बिम्बो का  
 आर ह. बोई देताय तइस्ता है सिमझता  
 ह. जिगर धामे भरता है यह नाला



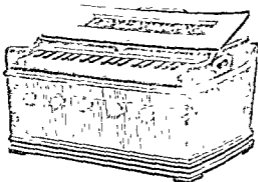


# "चीना आर्गन"

बदिया हार्मोनियम

₹ ६ मास

यदि आप हम से भाल मगाये तो आप को छति इत्तम  
हार्मोनियम मिल सकता ह ।



हमारा नया हार्मोनियम हमारा नया म...  
हमारा नया म...  
हमारा नया म...  
हमारा नया म...

हमारा नया म...

हमारा नया म...

हमारा नया म...























































# वेद राजे

आर्गेंट । डिस्टील ।  
एनालिसिस सिस्टम  
आंतुर्ग  
वेग पाठ्य पुन  
हस्ताक्षर ।



एव एवमेव एव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव  
एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव  
एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव  
एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव



मोफरिबन ( बाहर ) क  
ग्राहकोंमें पुरा बायडा ,

और

उन को स्तथापित करने का  
गहरंटा

---

आप अपने आशापत्र का मात्र फिर ।  
सुरक्षित पारग

---

एम. एल. साहा

पश्चिम गामोभोन, वाद्यज्य, प्रोडोगाफक, २०००००

और माइसिल डीलर्स

५११ धर्मावहा स्ट्रीट, कलकत्ता ।

---

जानो दिल से छात्र भी हाज़िर हूँ जो श्यांदा हो

रज़ार के धन तो अजर दिल रग लिये  
छोटे में मिन में धार गजब तुन हो जा लिये  
ना नहरनों की छाँव जो अ गि या पे जा पड़ी  
सीना खुला हुआ है दुःख सभालिये  
बोने पे इतनी गालियाँ फलार भी पनाह  
अर में भी बुद्ध बहुत गा जरा सुर सभालिये

दूसरी तरफ :—

गज़ल

हज़र अजर क्या हुआ यह जानने लाये हुए  
गंजल बौलाद दरने तेग में टाने हुए  
छोड़ हूँ मैं उज्ज्वल गेमु यशस्व विरल तरह  
एक मुहल में यह बाये साँर हैं पाये हुए  
कह दिया आतिश परमन अरने जहाँ न देगहर  
अर कन्ध अर भी मेरे आकली नाये हुए  
क्यों बहो पे गारजा शर म क्या आया नजर  
आन ही गहर में उ उल्लर का ह ह ह ह

यह ग़ज़ल 'ग़ज़ल' नामक संगीत-ग्रन्थ में प्रकाशित है। यह ग़ज़ल  
हिन्दी ग़ज़ल संगीत-ग्रन्थ में प्रकाशित है। यह ग़ज़ल  
हिन्दी ग़ज़ल संगीत-ग्रन्थ में प्रकाशित है। यह ग़ज़ल







## हिन्दी प्रामोक्षीन रिकार्ड संगीत

बीमार मोहम्बत को यज्ञ होगी तराशों  
 मुमत्र में अगर दृष्टते दीदार लिखा है  
 दे दृष्ट दिल बताने दे बपतक तू बन न होगा  
 हन दन बनेगा किम का जय तेरा दन न होगा  
 मुमत्रा हज़ार लिखिये हरगिज़ यज्ञ न होगी  
 हज़ार वस्तु जाना जय तक रखन न होना  
 मुमत्र में अगर दृष्टते दीदार लिखा है—सुदकपे हुए - - -  
 मुदों के जिताने का वह दावा न करें क्यों  
 पात्रे व की क कारमें उष कुन की मदा है

द्वितीय तरफ़ :

गज़ल

जो भी जनाब इक़त से दो वार हो गया  
 वह दो जहाँ के ज़ीने से बेज़ार हो गया  
 लज्जत रगे सिराक़ को भा सुल्ले इन्तज़ार  
 मैं वस्तु में भी ज़ीने से बेज़ार हो गया  
 दिल किम निगाहे मन्त का बीमार हो गया  
 जो ज़िन्दगी में जान से बेज़ार हो गया

P 0080

गज़ल

पौ० ६१

वह हम से बुर है हम उन से बुर है बनाने वाले बना रहे हैं  
 रिवाजों दिन में हो रही हैं—अब मोहम्बत के आ रहे हैं  
 तनाया मुक़्तिय में जा के देखो वह खेन करने हैं आदमों से  
 किमों के ज़ीने निगाह में मारा किमों को ख़ुदर दिवा रहे हैं



सोने का तो पीतले का मजह है मजहार ही  
 चाँस तो कुछ किचन माने बहुत सो हमारा ही  
 हाथ पैर धीरे बढ़ा कर मय तबों के पार ही  
 वे मृही प्येरी हई मुखा ही गये फिर मांगने  
 बज्ज लदांग में ह का मुर काय मोर लो हमारा ही  
 मय मारव अब कि अजहद हो गये वे होय मुन  
 हिन्द एक बोला कि उठो वा उठाऊ बह के नाम  
 एव बोला हाथ ली पर काह ई बदवार ही  
 सोने का तो बिजली पीतले मान ही वा पार ही  
 हिन्द सोने का पयदा लख मरिचक में बने  
 बल मारव मोर सोने सो जिन्कार होय हो  
 हिन्द सोने का ली ली फिर बभी लवता ही  
 पर मजहका लज्जका उर कापती लवता ही

दुसरी कथा :

मुजह

एव मोर एव की गरी गेताये का लख  
 लखार का वा हीये हिन्द हाथ के लख  
 मृह बनी तुं का कापल एव मुखा  
 काहि काहि वा मरिचके मरिचक का लख  
 लखार का के मुह ही ली गेता सो ह का  
 का लखार काका म काका का का ही का  
 का ली का का का का लखार का का  
 का लखार काका म काका का का ही का  
 का ली का का का का लखार का का  
 का लखार काका म काका का का ही का  
 का ली का का का का लखार का का











































# नया और नज़ा फोटोग्राफिक सामान

नये नज़ा के कैमरे  
सस्तेसे सस्ते  
कामसे



बड़े आकार का नज़ा कैमरा १०० रु. १०० रु. १०० रु. १०० रु.  
 छोटे आकार का नज़ा कैमरा ५० रु. ५० रु. ५० रु. ५० रु.  
 बड़े आकार का नज़ा कैमरा १०० रु. १०० रु. १०० रु. १०० रु.  
 छोटे आकार का नज़ा कैमरा ५० रु. ५० रु. ५० रु. ५० रु.  
 बड़े आकार का नज़ा कैमरा १०० रु. १०० रु. १०० रु. १०० रु.  
 छोटे आकार का नज़ा कैमरा ५० रु. ५० रु. ५० रु. ५० रु.





P 425.

सारंग दादरा

पी० ४२५

काहे मन नातो खड़ी रे गौरी बंगला  
 चांदी के पाड़ु बन्द सोने के बंधना  
 ऐरन की जोली में खिसे दोनों दुपना—काहे मन नातो - -  
 देखो न हूँओ महारन किमी का है, है  
 यह खत बहिषती बनी गदराये हुए हैं—काहे मन नातो - -

दूसरी तरफ :—

गज़ल दादरा

यू तो क्याह किया दिने खाने खराब ने  
 मजदू बनाया मुझे तेरे खिदाए ने  
 आंगिक बरे में बना मुझे खराब फलत है बात  
 खराब किया मुझे की मुन्हारे खराब ने—यू तो - - -  
 रहमतते तेरो हो गये में खुदा बिल्ली  
 पुनाह धो दिने खाने खराब ने—यू तो - - -  
 दुपन पं मेरो खाने तो मुं मया के यूं बहा  
 बदनाम कर दिया हम हो खाने खराब ने—यू तो - - -

—:—

P 426

दुमरी

पी० ४२६

एक बहुत मार कर कर निगाह  
 एक बन्द खाने का है "बसत म." खाने दूरा  
 दिया "बसत" का है खाने का खाने हम मारा मने सोना  
 एक बहुत मार



